Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 09 30 सितम्बर, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

लोक नायक, किसानों के मसीहा, जनकल्याण योद्धा-ताऊ देवीलाल

(25 सितम्बर जन्म दिवस पर विशेष)

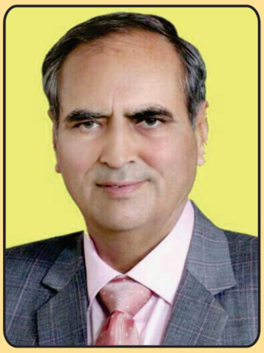

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

25 सितंबर 1914 – 06 अप्रैल 2001

लोक नायक, किसानों के मसीहा, जनकल्याण योद्धा–ताऊ देवीलाल प्रजातंत्र के पक्षधर थे। उनका मत था कि प्रजातंत्र में जनता की अदालत ही सर्वोपरी है और आमजन की भावनाओं व हितों का सम्मान ही प्रजातंत्र की सही पहचान है। इसीलिए उनका नारा था कि ''लोक तंत्र लोक लाज से चलता है।' उनकी सोच हमेशा सकारात्मक रही थी। इसीलिए लोक हित और जनकल्याण उनके लिए सर्वोपरि थे। उनका पूरा जीवन किसानों तथा कामगार वर्ग के लिए संघर्षरत रहा।

मात्र 16 वर्ष की आयु में ही ताऊ देवीलाल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी शिक्षा बीच में छोडकर अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े। स्वंय एक संपन्न व प्रगतिशील किसान होते हुए जीवन प्रयंत किसान, कामगार व खेतीहर मजदूर के हितों के लिए प्रयासरत रहे और अपनी सैंकड़ो एकड़ भूमि मुजारों, भूमिहीनों को कृषि के लिये दान दे दी। सत्ता में रहते हुए व सत्ता से बाहर होते हुए इस उपेक्षित वर्ग के कल्याण हेतू जनता के सहयोग से न्याय युद्ध, यातायात अवरूद्ध, रेल रोको, पैदल यात्रा आदि शांतिपूर्ण प्रदर्शनों से किसान, कामगार और कास्तगार को जागृत किया और समस्त सरकार को जन कल्याण हेतु बाध्य किया।

उनका मानना था कि किसान को अपने मौलिक अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने व उनमें राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने हेतू किसान, कामगार व कास्तगार वर्ग को राजनैतिक सत्ता में प्रतिनिधित्व/भागीदारी दिया जाना जरूरी है इसलिए उन्होंने कमेरा वर्ग के गरीब व मध्यमवर्गीय व्यक्ति को भी राजनीति व सत्ता में स्थान दिलवाया।

आज किसान वर्ग पूर्णतः संगठनहीन व नेतृत्वहीन हो चुका है। जिस कारण किसान वर्ग को हर बार विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रशासन व पुलिस कार्यवाही की प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। किसान विरोधी कृषि अध्यादेशों के विरोध में लंबे समय तक चले किसान आंदोलन में भी लगभग 756 किसान अपनी जान गवां चुके लेकिन केंद्र सरकार द्वारा दिवंगत किसानों को मुआवजा तो क्या शोक संदेश तक नहीं भेजा गया और ना ही आंदोलन की समाप्ति के समय किसानों की मांगों के बारे में किये गये वायदे पूरे किये गये।

अपने शासनकाल में उन्होने 'भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध' जैसे अनुकरणीय सिद्धांत कायम किए, जिनकी आज मांग उठने लगी है कि नेता, प्रशासन व राजनीति तंत्र सबको जनता के अधीन करना होगा ताकि चौधरी देवीलाल के जन कल्याणकारी शासन को शास्वत किया जा सके। मुख्यमंत्री होते हुए भी जनता के बीच चले जाते व बुजुर्गों व आम आदमी से खुलकर बातचीत करते थे। उनकी सोच थी कि जन सहयोगी व जनता की सरकार ही ग्रामीण समाज का कल्याण कर

शेष पेज–2 पर

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह इस बार कटरा में बनाया जायेगा।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला/सेवा सदन कटरा द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 143वीं जयंती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन यात्री निवास, कटड़ा (जम्मू) में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गर्वनर जम्मू–कश्मीर के होंगे। केन्द्रीय मन्त्रियों तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित किया जायेगा। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं और खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2023 से दिसंबर 2023 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं और जाट सभा के आजीवन सदस्य जो 80 वर्ष पूरा कर चुके है उन्हें भी सम्मानित किया जायेगा। अतः वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 15 दिसम्बर, 2023 तक सूचित करें। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 15 दिसम्बर, 2023 तक भेजें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

शेष पेज–1

सकती है। इसलिए आमजन की समस्याओं के निवारण के लिए जनता दरबार, प्रशासन आपके द्वार आदि कार्यक्रमों द्वारा प्रशासन व पुलिस की जबाबदेही सुनिश्चित की। लेकिन आज सरकार व प्रशासन की जन कल्याण के प्रति घोर लापरवाही देखी जा सकती है। विकलांगों, बुजुर्गों, विधवाओं की सम्मान पेंशन बिना जांच पड़ताल के बंद कर दी जाती है, यहां तक कि पेंशन धारक को मृत दिखा दिया जाता है। रोहतक (हरियाणा) के 92 वर्षीय दुलीचंद को अपने जिंदा होने का सबूत देने के लिये जन प्रदर्शन बरात की शक्ल में करना पडा जोकि सरकार व प्रशासन की घोर लापरवाही को दर्शाता है।

उनकी एक विशेष कल्याणकारी सोच थी कि जन कल्याणकारी व्यवस्था से ही ग्रामीण समाज के असहाय व गरीब व्यक्ति को राहत मिल सकती है। अपने शासनकाल में जनता के लिए बुढापा पैंशन, विकलांग पैंशन, विधवा पैंशन, बेरोजगार पैंशन, जच्चा–बच्चा योजना, गांव–गांव हरीजन चौपाल आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की जिनका आज पुरे राष्ट्र में अनुसरण किया जा रहा है। महिला शिक्षा के विकास के लिए पंचायतों को तीन गुणा मैचिंग ग्रांट देने का प्रावधान किया। खेलों को बढ़ावा देने तथा युवाओं के लिये रोजगार सुनिश्चित करने हेतु सरकारी नौकरी व पुलिस बल में 3 प्रतिशत खेल कोटे के साथ–साथ युवाओं के लिये नौकरी हेतु साक्षात्कार व परीक्षा देने जाने के लिये रोडवेज की बसों में मुफ्त सफर का प्रावधान किया। ऐसी जन कल्याणकारी सोच के कारण उनको समस्त राष्ट्र में ताऊ के नाम का सम्माननीय संबोधन प्राप्त हुआ। कांग्रेस पार्टी ने 1986 में श्री भजनलाल को मुख्यमंत्री से अपदस्थ किया और श्री बन्सीलाल जी को मुख्यमंत्री बनवाया, लेकिन चौ० देवी लाल ने अपनी जनप्रिय व न्यायवादी छवि के कारण वर्ष 1987 में विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटें जीतकर एकछत्र नेता के तौर पर एक नई मिशाल कायम की जिसकी बराबरी होना शायद असंभव है। इस अनुठी राजनैतिक विचारधारा की बदौलत वर्ष 1977 में जनविरोधी कांग्रेस का सफाया कर दिया जो कि वर्तमान राजनीतिज्ञों के लिए एक ऐतिहासिक अजुबे से कम नहीं है।

चौधरी साहब ने कभी भी छल–कपट व फरेब की राजनीति नहीं की। उनका कहना था कि मैं एक ग्रामीण हूं और चालाकी की राजनीति एक ग्रामीण की मर्यादा के खिलाफ है। वे सत्ता के गलियारों की बजाए अपने सीधे–साधे लोगों के साथ रहना पंसद करते थे। दगावान राजनैतिक साथियों के धोखा देकर अलग होने पर भी कभी विचलित नहीं हुए और सदैव एकछत्र शहनशाह बनकर उभरे। किसान–मजदूर के हितों के लिए प्रधानमंत्री की पेशकश को ठुकरा कर स्वर्गीय श्री वी.पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर तथा स्वर्गीय देवेगोड़ा को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की एक ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर बन गए। सोनीपत में अपने अतिंम भाषण में उन्होने कहा था कि हम राजनीति में देश की रक्षा व विकास के लिए आते हैं ना कि सत्ता सुख भोगने के लिए और निजी स्वार्थ को त्यागकर जनहित में जुट जाना ही सही राजनीति है। आज सत्ता प्राप्ति के लिये सत्ताधारी पक्ष की सोच कल्याणकारी नीति की बजाये सत्ता प्राप्ति पर केंद्रित होती जा रही है और इसके लिये विधायकों, मंत्रियों को दूरदराज होटलों में बंद करके सत्ता को बचाने के लिये उचित अनुचित जुगाड़ के लिए करोड़ों रुपये की पेशकश की जाती है।

हरियाणा प्रदेश के गठन के लिए उनका सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों के समक्ष उन्होंने हरियाणावासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवाई की और

उनके आंदोलन के आगे केंद्र सरकार को झुकना पड़ा और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा। छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भु–पट्टेधारी नियम बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम से 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किस्तों पर जमीन खरीदने का अधिकार दिलवाकर जमीन का मालिक बनवाया।

कांग्रेस की किसान विरोधी व तानाशाही नीतियों के विरोध में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और गांव–गांव जाकर किसानों, दलितों और मजदूरों की रक्षा के लिए संघर्ष समिति गठित की। सन 1975 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने देश में आपातकालीन स्थिति लागू कर दी तो

उसका डटकर विरोध किया और जेल भी गए, जहां से 19 माह बाद रिहा होकर समस्त विपक्ष को इकठा करके व राष्ट्रभर में कांग्रेस की जन विरोधी कारगुजारियों से जनता को आगाह करके सर्वदलीय जनता पार्टी के गठन में अहम भूमिका निभाई तथा कांग्रेस का सफाया हुआ। आमजन के प्रति उनके संघर्ष व लगाव के कारण पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ताऊ को जनता का प्रतीक कहा। इनकी सोच थी कि किसान मजदूर के जीवन यापन के मुख्य धंधे–कृषि का विकास थमने लगा है जो कि अब पूर्णतया घाटे का सौदा बन चुका है, तो हरियाणा में ग्रामीण उद्योग योजना लागू की, जिससे कृषि का भी विस्तार हुआ लेकिन अगली सरकारों ने इस योजना को बंद कर दिया। इसके साथ ही ग्रामीण जनता के लिए रोजगार सुनिश्चित करने हेतू एक परिवार एक रोजगार आयोग गठित किया था जिसको सन् 1991 में बंद कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हरियाणा प्रांत बेरोजगारी में 37.3 के स्कोर पर पहुंच चुका है जोकि राष्ट्र की बेरोजगारी 8.8 की दर से सबसे उच्च स्तर पर है।

जन नायक ताऊ देवीलाल का समस्त जीवन ग्रामीण भारत में फैले व्यापक शोषण, असमानता, गरीबी व अंधेरे को समाप्त करने के लिए संघर्ष में ही व्यतीत हुआ क्योंकि वे हमेशा कहा करते थे "मेरी असली ताकत भारत के ग्रामीण वर्ग में निहित है।" उन्हें हिंदी भाषा के साथ–साथ उर्दू भाषा से दिल से लगाव था। चौधरी देवीलाल ने सदैव किसान–मजदूर के दर्द को महसूस किया और जीवन प्रयंत कमेरा व लुटेरा वर्ग के बीच की खाई को पाटने में लगे रहे। किसान की फसल की बर्बादी को देखकर मुख्यमंत्री होते हुए सरकारी अमले को छोडकर खेत की मेढ पर बैठकर अत्यंत मायुस हो जाते और बाढ़ के दिनों में गांव में जाकर रिंग बांध बनाने हेतू स्वंय सिर पर मिट्टी का टोकरा उठा लेते।

वे मानते थे किसान सर्वाधिक मेहनती, भोला, ईमानदार व देशभक्त समुदाय है। वह एक अनिश्चित धंधे में लगा हुआ है, जो कि आज दयनीय स्तर पर पहुंच चुका है। चौधरी साहब ने सत्ता में आते ही प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान पर किसान को सरकारी कोष से मुआवजा दिलवाने का प्रावधान किया और वर्ष 1978 में ओलावृष्टि का 400 रूपये प्रति एकड़ मुआवजा दिलवाया और यह योजना आज तक चालू है। बाद में किसान के खेत के साथ खड़े वृक्षों में से किसान को आधी कीमत दिलवाई, किसानों, काश्तकारों, मजदूरों व श्रमिकों के 10 हजार तक के ऋण माफ किए और किसान–कामगार के लिए किसान मंडी, अपनी मंडी, मैचिंग ग्रांट, काम के बदले अनाज आदि लाभकारी योजनाएं शुरू की जो कि बाद में आने वाली सरकारों ने धीरे–धीरे बंद कर दी, जिस कारण किसान मजदूर आज फिर सरकारी उपेक्षा के कारण दयनीय हालत से गुजर रहा है। आज अन्नदाता खेत में आत्महत्या करने पर मजबूर है। देश में प्रतिवर्ष 18000 किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं और उसका बेटा सीमा पर दुश्मन की गोली खा रहा है लेकिन हालात की सुध लेने वालों को इसके लिए फुर्सत ही नहीं है।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा–ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा क्योंकि वे जन कल्याण योद्धा के रूप में समस्त राष्ट्र में समाज कल्याण के प्रथम सूत्रधार बने।

किसानों की आवाज का सुर्य उदय 25 सितंबर 1914 को तेजाखेड़ा गांव जिला सिरसा (हरियाणा) में हुआ और लगभग 60 साल तक किसान–कामगार की पुरजोर आवाज बुलंद करते हुए 06 अप्रैल 2001 को धरती पुत्र की आत्मा धरती में विलीन हो गई और सुर्य अस्त हो गया। आज जबकि राष्ट्र का हर किसान पुरी तरह पीड़ित है, वह अपनी समस्याओं के समाधान व निवारण हेतू किसी अन्य सुर्य (धरती पुत्र) के उदय होने की इंतजार में हैं।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तक चौधरी साहब के गुप्तचर विभाग के अधिकारी तथा प्रमुख (गुप्तचर विभाग) रहे हैं।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Saheed Bhagat Singh

(September 1907-23 March 1931)

Smt. Krishna Malik, Chairperson
Ch. Bharat Singh Memorial Sports Shikshan Sansthan,
Nidani, Jind (Haryana)

Saheed Bhagat Singh was a charismatic Indian revolutionary who participated in the murder of a junior British police officer and an Indian head constable in mistaken retaliation for the death of an Indian nationalist. He also took part in a largely symbolic bombing of the Central Legislative Assembly in Delhi and a hunger strike in jail, which-on the back of sympathetic coverage in Indian-owned newspapers-turned him into a household name in Punjab region, and after his execution at age 23 into a martyr and folk hero in Northern India. Borrowing ideas from Bolshevism and anarchism, he electrified a growing militancy in India in the 1930s, and prompted urgent introspection within the Indian National Congress's nonviolent but eventually successful campaign for India's independence.

In December 1928, Bhagat Singh and an associate, Shivaram Rajguru, both members of a small revolutionary group, the Hindustan Socialist Republican Association (also Army, or HSRA), shot dead a 21-year-old British police officer, John Saunders, in Lahore, Punjab, in whatis today Pakistan, mistaking Saunders, who was still on probation, for the British senior police superintendent, James Scott, whom they had intended to assassinate. [13] They held Scott responsible for the death of a popular Indian nationalist leader Lala Lajpat Rai for having ordered a lathi (baton) charge in which Rai was injured and two weeks thereafter died of a heart attack. As Saunders exited a police station on a motorcycle, he was felled by a single bullet fired from across the street by Rajguru, a marksman. As he lay injured, he was shot at close range several times by Singh, the postmortem report showing eight bullet wounds.Another associate of Singh, Chandra Shekhar Azad, shot dead an Indian police head constable, Channan Singh, who attempted to give chase as Singh and Rajguru fled.

After having escaped, Bhagat Singh and his associates used pseudonyms to publicly announce avenging Lajpat Rai's death, putting up prepared posters that they had altered to show John Saunders as their intended target instead of James Scott. Singh was thereafter on the run for many months, and no convictions resulted at the time. Surfacing again in April 1929, he and another associate, Batukeshwar Dutt, set off two low-intensity homemade bombs among some unoccupied benches of the Central Legislative Assembly in Delhi. They showered leaflets from the gallery on the legislators below, shouted slogans, and allowed the authorities to arrest them. The arrest, and the resulting publicity, brought to light Singh's complicity in the John Saunders case. Awaiting trial, Singh gained public sympathy after he joined fellow defendant Jatin Das in a hunger strike, demanding better prison conditions for Indian prisoners, the strike ending in Das's death from starvation in September 1929.

Bhagat Singh was convicted of the murder of John Saunders and Channan Singh, and hanged in March 1931, aged 23. He became a popular folk hero after his death. Jawaharlal Nehru wrote about him: "Bhagat Singh did not become popular because of his act of terrorism but because he seemed to vindicate, for the moment, the honour of Lala Lajpat Rai, and through him of the nation. He became a symbol; the act was forgotten, the symbol remained, and within a few months each town and village of the Punjab, and to a lesser extent in the rest of northern India, resounded with his name." In still later years, Singh, an atheist and socialist in adulthood, won admirers in India from among a political spectrum that included both communists and right-wing Hindu nationalists. Although many of Singh's associates, as well as many Indian anti- colonial revolutionaries, were also involved in daring acts and were either executed or died violent deaths, few came to be lionised in popular art and literature as did Singh, who is sometimes referred to as the Shaheed-e-Azam ("Great martyr" in Urdu and Punjabi).

Early life

Bhagat Singh was born on 27 September 1907 in the village of Banga in the Lyallpur district of the Punjab in what was then British India and is today Pakistan; he was the second of seven children- four sons, and three daughters-born to Vidyavati and her husband Kishan Singh Sandhu. Bhagat Singh's father and his uncle Ajit Singh were active in progressive politics, taking part in the agitation around the Canal Colonization Bill in 1907, and later the Ghadar Movement of 1914-1915.

After being sent to the village school in Banga for a few years, Bhagat Singh was enrolled in the Dayanand Anglo-Vedic School in Lahore. In 1923, he joined the National College in Lahore, founded two years earlier by Lala Lajpat Rai in response to Mahatma Gandhi's non-cooperation movement, which urged Indian students to shun schools and colleges subsidized by the British Indian government.

Police became concerned with Singh's influence on youths and arrested him in May 1927 on the pretext that he had been involved in a bombing that had taken place in Lahore in October 1926. He was released on a surety of Rs. 60,000 five weeks after his arrest. He wrote for, and edited, Urdu and Punjabi newspapers, published in Amritsar and also contributed to low-priced pamphlets published by the Naujawan Bharat Sabha that excoriated the British. He also wrote for Kirti, the journal of the Kirti Kisan Party ("Workers and Peasants Party") and briefly for the Veer Arjun newspaper, published in Delhi. He often used pseudonyms, including names such as Balwant, Ranjit and Vidhrohi.

Revolutionary activities Killing of John Saunders

In 1928, the British government set up the Simon Commission to report on the political situation in India. Some Indian political parties boycotted the Commission because there were no Indians in its membership,[c] and there were protests across the country. When the Commission visited Lahore on 30 October 1928, Lala Lajpat Rai led a march in protest against it. Police attempts to disperse the large crowd resulted in violence. The superintendent of police, James A. Scott, ordered the police to lathi charge (use batons against) the protesters and personally assaulted Rai, who was injured. Rai died of a heart attack on 17 November 1928. Doctors thought that his death might have been hastened by the injuries he had received. When the matter was raised in the Parliament of the United Kingdom, the British Government denied any role in Rai's death.

Singh was a prominent member of the Hindustan Republican Association (HRA) and was probably responsible, in large part, for its change of name to Hindustan Socialist Republican Association (HSRA) in 1928. The HSRA vowed to avenge Rai's death. Singh conspired with revolutionaries like Shivaram Rajguru, Sukhdev Thapar, and Chandrashekhar Azad to kill Scott. However, in a case of mistaken identity, the plotters shot John P. Saunders, an Assistant Superintendent of Police, as he was leaving the District Police Headquarters in Lahore on 17 December 1928.

Contemporary reaction to the killing differssubstantially from the adulation that later surfaced.The Naujawan Bharat Sabha, which had organized the Lahore protest march along with the HSRA,found that attendance at its subsequent publicmeetings dropped sharply. Politicians, activists, andnewspapers, including The People, which Rai hadfounded in 1925, stressed that non-co-operation waspreferable to violence. The murder was condemned as a retrograde action by Mahatma Gandhi, the Congress leader, but Jawaharlal Nehru later wrote that:

Bhagat Singh did not become popular because of his act of terrorism but because he seemed to vindicate, for the moment, the honour of Lala Lajpat Rai, and through him of the nation. He became a symbol, the act was forgotten, the symbol remained, and within a few months each town and village of the Punjab, and to a lesser extent in the rest of northern India, resounded with his name. Innumerable songs grew about him and the popularity that the man achieved was something amazing.

Killing of Channan Singh

After killing Saunders, the group escaped through the D.A.V. College entrance, across the road from the District Police Headquarters. Chanan Singh, a Head Constable who was chasing them, was shot dead by Chandrashekhar Azad. They then fled on bicycles to pre-arranged safe houses. The police launched a massive search operation to catch them, blocking all entrances and exits to and from the city; the CID kept a watch on all young men leaving Lahore. The fugitives hid for the next two days. On 19 December 1928, Sukhdev called on Durgawati Devi, sometimes known as Durga Bhabhi, wife of another HSRA member, Bhagwati Charan Vohra, for help, which she agreed to provide. They decided to catch the train departing from Lahore to Bathinda en route to Howrah (Calcutta) early the next morning.

Escape from Lahore

Bhagat Singh and Rajguru, both carrying loaded revolvers, left the house early the next day. Dressed in western attire (Bhagat Singh cut his hair, shaved his beard and wore a hat over cropped hair), and carrying Devi's sleeping child, Singh and Devi passed as a young couple, while Rajguru carried their luggage as their servant. At the station, Singh managed to conceal his identity while buying tickets, and the three boarded the train heading to Cawnpore (now Kanpur). There they boarded a train for Lucknow since the CID at Howrah railway station usually scrutinised passengers on the direct train from Lahore. At Lucknow, Rajguru left separately for Benares while Singh, Devi and the infant went to Howrah, with all except Singh returning to Lahore a few days later.

Delhi Assembly bombing and arrest

For some time, Bhagat Singh had beenexploiting the power of drama as a means to inspirethe revolt against the British, purchasing a magiclantern to show slides that enlivened his talks aboutrevolutionaries such as Ram Prasad Bismil who haddied as a result of the Kakori conspiracy. In 1929,he proposed a dramatic act to the HSRA intendedto gain massive publicity for their aims. Influencedby Auguste Vaillant, a French anarchist who hadbombed the Chamber of Deputies in Paris, Singh's plan was to explode a bomb inside the Central Legislative Assembly. The nominal intention was to protest against the Public Safety Bill, and the Trade Dispute Act, which had been rejected by the Assembly but were being enacted by the Viceroy using his special powers; the actual intention was for the perpetrators to allow themselves to be arrested so that they could use court appearances as a stage to publicise their cause.

The HSRA leadership was initially opposed to Bhagat's participation in the bombing because they were certain that his prior involvement in the Saunders shooting meant that his arrest would ultimately result in his execution. However, they eventually decided that he was their most suitable candidate. On 8 April 1929, Singh, accompanied by Batukeshwar Dutt, threw two bombs into the Assembly chamber from its public gallery while it was in session. The bombs had been designed not to kill, but some members, including George Ernest Schuster, the finance member of the Viceroy's Executive Council, were injured. The smoke from the bombs filled the Assembly so that Singh and the Dutt could probably have escaped in the confusion had they wished. Instead, they stayed shouting the slogan "Inquilab Zindabad!" ("Long Live the Revolution") and threw leaflets. The two men were arrested and subsequently moved through a series of jails in Delhi.

Assembly case trial

According to Neeti Nair, associate professor of history, “public criticism of this terrorist action was unequivocal.”Gandhi, once again, issued strong words of disapproval of their deed. Nonetheless, the jailed Bhagat was reported to be elated, and referred to the subsequent legal proceedings as a “drama”. Singh and Dutt eventually responded to the criticism by writing the Assembly Bomb Statement.

We hold human life sacred beyond words. We are neither perpetrators of dastardly outrages. nor are we lunatics’ as the Tribune of Lahore and some others would have it believed... Force when aggressively applied is ‘violence’ and is, therefore, morally unjustifiable, but when it is used in the furtherance of a legitimate cause, it has its moral justification.

The trial began in the first week of June, following a preliminary hearing in May. On 12 June, both men were sentenced to life imprisonment for. “causing explosions of a nature likely to endanger life, unlawfully and maliciously.” Dutt had been defended by Asaf Ali, while Singh defended himself. Doubts have been raised about the accuracy of testimony offered at the trial. One key discrepancy concerns the automatic pistol that Singh had beencarrying when he was arrested. Some witnessessaid that he had fired two or three shots while the police sergeant who arrested him testified that the gun was pointed downward when he took it from him and that Singh “was playing with it.” According to an article in the India Law Journal, the prosecution witnesses were coached, their accounts were incorrect, and Singh had turned over the pistol himself. Singh was given a life sentence.

Arrest of Associates

In 1929, the HSRA had set up bomb factories in Lahore and Saharanpur. On 15 April 1929, the Lahore bomb factory was discovered by the police, leading to the arrest of other members of HSRA, including Sukhdev, Kishori Lal, and Jai Gopal. Not long after this, the Saharanpur factory was also raided and some of the conspirators became informants. With the new information available, the police were able to connect the three strands of the Saunders murder, Assembly bombing, and bomb manufacture. Singh, Sukhdev, Rajguru, and 21 others were charged with the Saunders murder.

Hunger strike and Lahore conspiracy case

Singh was re-arrested for murdering Saundersand Chanan Singh based on substantial evidence against him, including statements by his associates, Hans Raj Vohra and Jai Gopal. His life sentence in the Assembly Bomb case was deferred until the Saunders case was decided. He was sent to Central Jail Mianwali from the Delhi jail. There he witnessed discrimination between European and Indian prisoners. He considered himself, along with others, to be a political prisoner. He noted that he had received an enhanced diet at Delhi which was not being provided at Mianwali. He led other Indian, self-identified political prisoners he felt were being treated as common criminals in a hunger strike. They demanded equality in food standards, clothing, toiletries, and other hygienic necessities, as well as access to books and a daily newspaper. They argued that they should not be forced to do manual labour or any undignified work in the jail.

The hunger strike inspired a rise in public support for Singh and his colleagues from around June 1929. The Tribune newspaper was particularly prominent in this movement and reported on mass meetings in places such as Lahore and Amritsar. The government had to apply Section 144 of the criminal code in an attempt to limit gatherings.

Daily milap poster of the Lahore conspiracy case 1930.Death sentence of Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru.

Jawaharlal Nehru met Singh and the other strikers in Central Jail Mianwali. After the meeting, he stated:

I was very much pained to see the distress of the heroes. They have staked their lives in this struggle. They want that political prisoners should be treated as political prisoners. I am quite hopeful that their sacrifice would be crowned with success.

Muhammad Ali Jinnah spoke in support of the strikers in the Assembly, saying:

The man who goes on hunger strike has a soul. He is moved by that soul, and he believes in the justice of his cause... however much you deplore them and, however, much you say they are misguided, it is the system, this damnable system of governance, which is resented by the people.

The government tried to break the strike by placing different food items in the prison cells to test the prisoners’ resolve. Water pitchers were filled with milk so that either the prisoners remained thirsty or broke their strike, nobody faltered and the impasse continued. The authorities then attempted force-feeding the prisoners but this was resisted. [50][d] With the matter still unresolved, the Indian Viceroy, Lord Irwin, cut short his vacation in Simla to discuss the situation with jail authorities. [52] Since the activities of the hunger strikers had gained popularity and attention amongst the people nationwide, the government decided to advance the start of the Saunders murder trial, which was henceforth called the Lahore Conspiracy Case. Singh was transported to Borstal Jail, Lahore, and the trial began there on 10 July 1929. In addition to charging them with the murder of Saunders, Singh and the 27 other prisoners were charged with plotting a conspiracy to murder Scott, and waging a war against the King. Singh, still on hunger strike, had to be carried to the court handcuffed on a stretcher; he had lost 14 pounds (6.4 kg) from his original weight of 133 pounds (60 kg) since beginning the strike.

The government was beginning to make concessions but refused to move on the core issue of recognising the classification of “political prisoner”. In the eyes of officials, if someone broke the law then that was a personal act, not a political one, and they were common criminals. By now, the condition of another hunger striker, Jatindra Nath Das, lodged in the same jail, had deteriorated

considerably. The Jail committee recommended his unconditional release, but the government rejected the suggestion and offered to release him on bail. On 13 September 1929, Das died after a 63-day hunger strike. Almost all the nationalist leaders in the country paid tribute to Das' death. Mohammad Alam and Gopi Chand Bhargava resigned from the Punjab Legislative Council in protest, and Nehru moved a successful adjournment motion in the Central Assembly as a censure against the "inhumane treatment" of the Lahore prisoners. Singh finally heeded a resolution of the Congress party, and a request by his father, ending his hunger strike on 5 October 1929 after 116 days. During this period, Singh's popularity among common Indians extended beyond Punjab.

Singh's attention now turned to his trial, where he was to face a Crown prosecution team comprising C. H. Carden-Noad, Kalandar Ali Khan, Jai Gopal Lal, and the prosecuting inspector, Bakshi Dina Nath. The defence was composed of eight lawyers. Prem Dutt Verma, the youngest amongst the 27 accused, threw his slipper at Gopal when he turned and became a prosecution witness in court. As a result, the magistrate ordered that all the accused should be handcuffed.[44] Singh and others refused to be handcuffed and were subjected to brutal beating. The revolutionaries refused to attend the court and Singh wrote a letter to the magistrate citing various reasons for their refusal. The magistrate ordered the trial to proceed without the accused or members of the HSRA. This was a setback for Singh as he could no longer use the trial as a forum to publicise his views.

Special Tribunal

To speed up the slow trial, the Viceroy, Lord Irwin, declared an emergency on 1 May 1930 and introduced an ordinance to set up a special tribunal composed of three high court judges for the case. This decision cut short the normal process of justice as the only appeal after the tribunal was to the Privy Council located in England.

On 2 July 1930, a habeas corpus petition was filed in the High Court challenging the ordinance. on the grounds that it was ultra vires and, therefore, illegal; the Viceroy had no powers to shorten the customary process of determining justice. The petition argued that the Defence of India Act 1915 allowed the Viceroy to introduce an ordinance, and set up such a tribunal, only under conditions of a breakdown of law-and-order, which, it was claimed in this case, had not occurred. However, the petition was dismissed as being premature.

Carden-Noad presented the government's charges of conducting robberies, and the illegal acquisition of arms and ammunition among others. The evidence of G. T. H. Hamilton Harding, the Lahore superintendent of police, shocked the court. He stated that he had filed the first information report against the accused under specific orders from the chief secretary to the governor of Punjab and that he was unaware of the details of the case. The prosecution depended mainly on the evidence of P. N. Ghosh, Hans Raj Vohra, and Jai Gopal who had been Singh's associates in the HSRA. On 10 July 1930, the tribunal decided to press charges against only 15 of the 18 accused and allowed their petitions to be taken up for hearing the next day. The trial ended on 30 September 1930. The three accused, whose charges were withdrawn, included Dutt who had already been given a life sentence in the Assembly bomb case.

चौधरी लखीराम पुनियां, आईपीएस(रिटायर्ड) एक कर्मठ व ईमानदार शख्सियत

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

चौधरी लखीराम पुनियां का जन्म हरियाणा के एक किसान परिवार गांव बिचपड़ी, तहसील गोहाना जिला सोनीपत में दिनांक 21.09.1930 को हुआ। उन्होंने सारा बचपन गांव में ही व्यतीत किया। उनके पिता जी चौधरी मेघराम थे। जिनके केवल एक लड़का और एक लड़की थी। मेघराम की पत्नी दोनों बच्चों को बचपन में ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। दोनों बच्चों का पालन पोषण चौधरी मेघराम ने ही किया। मेघराम के लड़के का नाम चौधरी लखीराम पुनियां था। गांव के बड़े किसान के सुपुत्र थे लेकिन उनकी माताजी का छोटी उम्र में ही स्वर्गवास होने के कारण 14 साल की उम्र में ही चौधरी लखीराम पुनियां की शादी, गांव शामड़ी की लड़की धनपति देवी जिनकी उम्र 13 वर्ष थी के साथ हो गई थी।

चौधरी लखीराम पुनियां ने चौथी कक्षा तक पढ़ाई गांव से ही की और आठवीं कक्षा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बुटाना से पास की। उस समय आने–जाने का कोई भी साधन नहीं था तथा बिचपड़ी से बुटाना लगभग 4 किलोमीटर था। हर रोज पढ़ाई के लिये उनको 8 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था। उसके बाद दसवीं की पढ़ाई सरकारी हाई स्कूल, गोहाना से की। बिचपड़ी से गोहाना 10 किलोमीटर पड़ता है यह सफर भी उन्होंने 2 साल तक पैदल चलकर ही तय किया। पढ़ाई में हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करते रहें और उसके बाद बी.ए. की पढ़ाई जाट हिरोज़ मैमोरियल कॉलेज, रोहतक से पास की। उन्होंने पारसी में पंजाब यूनिवर्सिटी में बी.ए. ऑनर्ज के साथ प्रथम स्थान प्राप्त करते हुये स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1952 में पंजाब विश्वविद्यालय से पारसी व अन्य विषयों में बी.ए. पास की।

1954 ई. में इतिहास विषय में एम.ए. की डिग्री पंजाब विश्वविद्यालय से पास की। उसके बाद तुरंत पंजाब सहकारी विभाग में निरीक्षक भर्ती हुए। उसके बाद 1957 में पंजाब लोक सेवा आयोग के मार्फत पंजाब पुलिस में सीधे निरीक्षक के रूप में उनका चयन हुआ। फिल्लोर में एक वर्ष की पुलिस ट्रैनिंग की। तत्पश्चात उनकी डयूटी अमृतसर, फिरोजपुर, जालंधर और शिमला आदि थानों में पुलिस निरीक्षक बतौर इंस्पैक्टर रही। उन्होंने इस दौरान एक अनुभवी उत्तम सोच अधिकारी होने का गौरव हासिल किया। 1964 में जब वह शिमला थे तो उनकी पदोन्नति बतौर उपअधीक्षक पुलिस हो गई। उसके बाद 1965 में भारत पाकिस्तान युद्ध में मेजर जरनल उमराव सिंह एम.वी.सी. के अधीन और श्री अश्वनी कुमार, आई.पी.एस. के मार्गदर्शन पर पंजाब आरम्ड पुलिस का नेतृत्व करते हुए एक अहम भूमिका निभाई। हरियाणा बनने के उपरांत 1966 में वे हरियाणा पुलिस में डीएसपी करनाल, कुरुक्षेत्र, मेवात आदि में रहे। जहां उन्होंने दंगे–फसाद और गौ तस्करी पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाया और सन् 1972 ई. में नूंह में उपपुलिस अधीक्षक के पद पर रहते हुवे एक गौशाला स्थापित की और गऊओ का पूरे वर्ष का चारा हर वर्ष बिचपड़ी गांव से भेजा करते थे। गऊओ की सेवा का फल भगवान ने भाई साहब को आर्शीवाद के रूप में दिया और वे सन् 1973 में आई.पी.एस. के पद पर पदौन्नत हुवे। आई.पी.एस. पदौन्नत होने पर बतौर एस एस पी महेन्द्रगढ़, भिवानी, करनाल, हिसार आदि में रहे। वह एक जाने–माने पुलिस अधीक्षक और अच्छे प्रशासक रहे। एस पी के तौर पर सामाजिक तनाव को भी अपने सूझबूझ और पुलिस सोच से ऊपर उठकर स्थिति को काबू कर शांति कायम करते रहे। वर्ष 1978 में बतौर अधीक्षक पुलिस करनाल शहर में लगे, जहां इन्होंने सर्राफा बाजार में गुरुद्वारे व मंदिर का झगड़ा शांतिपूर्वक निपटा कर वहां मंदिर बनवाया और दोनों में शांति कायम की और दोनों को सुरक्षित रखा। अपनी डयूटी के अतिरिक्त कानून के विषयों के बारे में अध्ययन करने में उनकी गहरी रूचि रही। पुलिस रूल्ज, आई.पी.सी तथा सी.आर.पी.सी के बारे में उनको बाखूबी ज्ञान था। एक बार सन् 1987 में आई.पी.एस का सलैक्शन ग्रेड लेने हेतू उन्होंने पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट में रिट दायर की हुई थी और हाई कोर्ट में इस विषय पर बहस चल रही थी। तो अपने वकील ठाकूर नौबत सिंह पंवार को एक रूल्ज बुक देकर कहा कि यह लाईन जज साहब को पढ़कर सुनाये। ठाकुर साहब ने भाई साहब की बताई लाईन पढ़ी तो जज साहब ने तुरन्त 1 जनवरी 1986 डयू डेट से भाई साहब को आई.पी.एस. का सलैक्शन ग्रेड दे दिया। उस समय मैं स्वयं (लेखक) भाई साहब चौधरी लखीराम पुनियां के पास ही हाई कोर्ट में बैठा हुआ था। इस मौके का मैं स्वयं चश्मदीद गवाह हूं। भाई साहब चौधरी लखीराम पुनियां अपना नीजी व कोई भी सरकारी केस किसी भी न्यायालय में नहीं हारे। उन्हें हमेशा जीत ही मिलती रही। क्योंकि वे स्वयं अपने जीवन में कानूनों के बारे में हमेशा अध्ययनरत रहते थे।

उन्होंने अपने जीवनकाल में समाज की भलाई के लिये बहुत ही सराहनीय कार्य किये। उनके जानकार व अनजाना कोई भी व्यक्ति किसी कार्य के लिये आया तो उन्होंने किसी को भी नाराज नहीं किया। सभी का कार्य किया। अपनी सरकारी सेवा के दौरान उन्होंने बहुत बच्चों को पुलिस व अन्य विभागों में रोजगार दिलवाया। उनकी बदौलत हमारे गांव में 125–30 बच्चों को रोजगार मिला इसके अलावा सैंकड़ों अन्य गांवों के बच्चों को रोजगार दिलवाया। उन्होंने अपने सेवाकाल में किसी भी मातहत कर्मचारी का रिकार्ड खराब नहीं किया अपितु किसी का रिकार्ड पहले से खराब था तो उसे भी ठीक किया। भाई साहब चौ. लखीराम पुनियां ने एक बार मुझे भी कहा था कि आपके पास भगवान ने ताकत दी है किसी भी मातहत कर्मचारी का रिकार्ड खराब ना करना। क्योंकि मानव के प्रति उनके मन में बहुत बड़ी दया थी।

वर्ष 1987 में जब वे एस एस पी हिसार थे तो गांव लाडवा जिला हिसार से चौधरी राजबीर सिंह पुनियां, हरको बैंक मैनेजर किसी रोड जाति से संबंधित लड़के को पुलिस में भर्ती करवाने ले आया तो भाई साहब ने पूछा कि ये कौन है तो राजबीर सिंह ने बताया कि यह रोड है तो भाई साहब ने पूछा कि ये रोड कौन होते है तो चौधरी राजबीर सिंह ने बताया कि ये रोड भी जाटो बरगे होते हैं, तो भाई साहब ने कहा कि बरगे नहीं हमें तो शुद्ध जाट चाहिये। अपनी कौम के प्रति उनमें गहरे प्यार का मादा था। चौधरी राजबीर सिंह पुनियां के कहने अनुसार भाई साहब ने वह रोड का लड़का भी भर्ती कर लिया था, उसको भी नाराज नहीं किया।

मानव सेवा के साथ–साथ भाई साहब चौधरी लखीराम पुनियां एक बहुत बड़े गौ भक्त भी थे। भाई साहब की गौ सेवा को देखते हुये मैं तो उनके बारे में यही कहता हूं कि अगर चौधरी हरफूल सिंह जाट जुलानी और भगत फूल सिंह के बाद कोई गौ भगत हुये हैं तो वे भाई साहब चौधरी लखीराम पुनियां हुये हैं, क्योंकि उन्होंने गत वर्ष 2022 में अपनी नीजी साढ़े चार एकड़ भूमि पिंढ़ारा गौशाला जीन्द को गऊओं के चारे के लिये दान में दे दी। अपनी पूरी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठता से शानदार पुलिस सेवा करते हुए 30.9.1988 में सेवानिवृत हुए।

जीवन के अंतिम समय तक सामाजिक सेवा और लोकहित सेवा के लिये संघर्ष करते रहे। अपनी निजी पेंशन में से 25–30 हजार रुपये प्रति माह विभिन्न गौशालाओं में और अपाहिज बच्चों के स्कूलों को दान देते रहे। आखिरकार 93 वर्ष की आयु होने पर रोहतक हस्पताल में 14 अगस्त 2023 को शाम 6:30 बजे अपनी अंतिम सांस ली और स्वर्ग सिधार गये। परिवार में एक लड़का और तीन लड़कियों को छोड़ गए। उनके सुपुत्र श्री ध्यान सिंह पुनियां, एस पी कमांडेन्ट थर्ड बटालियन हरियाणा पुलिस हिसार के पद पर कार्यरत है, पुत्रवधू प्रोफेसर सविता पुनियां, दामाद डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आईपीएस (सेवानिवृत्त) पूर्व पुलिस महानिदेशक हरियाणा, जो जाट सभा चडीगढ़, पंचकूला तथा चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा, जम्मु के प्रधान के साथ–साथ अन्य कई सामाजिक व लोकहित संस्थाओं के भी प्रधान/अध्यक्ष है। प्रधान की अच्छी और साकारात्मक सोच से सभी संस्थान सफलतापूर्वक कार्यरत है। हाल ही में इन्होंने निड़ानी में सैनिक ट्रेनिंग संस्था खोली है। जिस संस्था के अभी हाल ही में प्रथम बैच के 15 छात्र एन.डी.ए. में भर्ती हुये है। श्री राम सिंह मलिक, पूर्व खाद्य आपूर्ति डिप्टी डायरेक्टर हरियाणा, सुपुत्री श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्टस शिक्षण संस्थान, निड़ानी, जीन्द। इन दोंनो संस्थानों के छात्र और छात्राओं ने विश्व स्तर पर तथा औलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। जिनमें से तीन छात्राओं को राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन अवार्ड दिया गया है। श्रीमती कृष्णा मलिक, गुरूकुल खानपुर की भी अध्यक्ष रही है। जिन्होंने अपने कार्यकाल में काफी कोर्स को बढ़ावा दिया, जैसे लड़कियों के लिये नर्सनिंग व एल.एल.बी के कॉलेज की स्थापना की।

चौ० लखीराम पुनियां हरियाणा प्रांत बनने पर हरियाणा पुलिस कैडर तथा बाद में भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश करने का गौरव प्राप्त किया। चौधरी लखीराम पुनियां जी की एक परिश्रमी, दंबग, ईमानदार एवं स्पष्टवादी पुलिस अधिकारी के तौर पर विशिष्ट पहचान रही है, जिन्होंने अपनी समस्त सेवा के दौरान अपने सिद्धांतों व स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया। हरियाणा प्रांत में करनाल, भिवानी, हिसार आदि जिलों में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के रूप में की गई सेवाओं के लिए प्रदेश के मुख्य मंत्रियों, पंडित भगवत दयाल शर्मा जी, मास्टर हुकुम सिंह, श्री बनारसी दास गुप्ता, चौधरी देवीलाल, चौधरी बंसीलाल और चौधरी भजनलाल ने उनके कार्यकाल में उनके उल्लेखनीय कार्यों व मजबूत कानून व्यवस्था बनाये रखने पर प्रशंसा की जिस कारण उनको आज भी एक ईमानदार व दबंग पुलिस अधिकारी के तौर पर जाना जाता है। चौधरी लखीराम पुनियां एक सुलझे हुए अनुभवी पुलिस अधिकारी रहे, जिस कारण उनके कार्यकाल में कहीं भी दंगा फसाद नहीं हुआ। जब प्रदेश में आतंकवाद का माहौल था, उस समय भी उन्होंने संयम व सुझबूझ से शांति बनाए रखी।

वे देश सेवा के साथ–साथ सामाजिक व लोकहित कार्यों में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते थे और सदैव राष्ट्रवाद और भाईचारा के समर्थक रहे और गौ माता की रक्षा के लिए अपना जीवन सेवारत रखा और गौशाला निर्माण के लिए दान देते रहे। चौधरी लखीराम पुनियां का लेखन व उर्दू साहित्य के प्रति भी विशेष लगाव था। वह उर्दू के मशहूर शायर/कवि डॉ० मोहम्मद इकबाल, मिर्जा गालिब के साहित्य तथा किसान मसीहा दीनबंधु चौधरी छोटू राम की किसान व समाज सुधारक नीतियों के सदैव कायल रहे। चौधरी लखीराम पुनियां आज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनकी मिलनसार सादगीपूर्ण, स्पष्टवादी व संघर्षशील छवि पहचान के तौर से हम सभी को स्मरणीय रहेगी।

चौधरी लखीराम पुनियां जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा के आजीवन मेंबर भी थे। चौधरी लखीराम पुनियां, आईपीएस (रिटायर्ड) एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा, जम्मू के सभी सदस्यगण चौधरी लखीराम पुनियां, आईपीएस (रिटायर्ड) की दिवगंत आत्मा को सदैव नमन करते रहेंगे।

Bhim Singh Dahiya, IRS (retd.)

(29th Sept., 1940 to 13th May, 2000)

B.S. Gill, Secretary
Jat Sabha

Bhim Singh Dahiya was a historian and Civil Servant belonging to the Indian Revenue Service (IRS). He was born at village Sehri-Khanda, District Sonipat in Haryana, on March 19, 1940. (though official records put his birth date as 29th of September, 1940).

Career

Bhim Singh Dahiya did his B.Sc. from Panjab University [1] and an M.A. from Delhi University He was selected for Indian Revenue Service in 1963, having taken the IAS (Indian Administrative Service) examination with English and history as his chosen areas. He had great admiration for the works of William

Shakespeare, loved to read historical studies with a particular interest in Indo- European cultures and languages and excelled at playing cards. He retired from Govt. service as Chief Commissioner of Income tax in 1998.

Books on History by Bhim Singh Dahiya, Jats the Ancient Rulers (A clan study)

In 1982, he wrote the monumental book- Jatsthe Ancient Rulers (A clan study), published by Dahinam Publishers, Sonipat, Haryana. This book is a reconstruction of the History of Jats from time immemorial. His linkages of the clan names/ Gotras to the existence of the Jats in Central Asia, and Europe, put a stamp on the histography of the Jat History, for the people who could not have access to the works in Hindi or Urdu.

Bhim Singh Dahiya brought out to the knowledge of layman reader that Chandragupta Maurya, the Kushans, the second Guptas, and Harshavardhana were Jats. He showed by applying Grimm's Law, how the G letter was a substitution for the J sound, as the J letter did not exist in the ancient Greek alphabet. The significance was in determining who the Guti were, whom the Chinese and Western and most Indian Historians know as the 'Yuezhi', but are Jats, of whom Kushans were just one clan, not a people unto themselves.

Aryan Tribes and the Rig Veda

In 1992, he brought out his next book- Aryan Tribes and the Rig Veda, published by Dahinam Publishers, Sonipat, Haryana. Here he demonstrated how over 80 Jat Goths, Gotras, clans could be traced back to the Rig Veda. The Rig Veda is treated as a historical record of deeds and memories of the Indo-European tribes in India, rather than considering it merely a religious prayer book as was generally assumed earlier.

History of Hindustan

His third great work in the history is in the form o f

Book-History of Hindustan Vol. I, II, III. Dahinam Publishers, Sonipat, Haryana also published it.

Book on Dr. Sarup Singh

Dr. Bhim Singh Dahiya's 152 page fast-moving biography of Singh titled Dr. Sarup Singh and His Times an anecdotal account brings to the fore admirably his roles as son, husband, father, teacher, administrator, politician, statesman, and scholar. The book is a carefully researched depiction of a man whose humanitarianism and generosity manifested themselves in every position that he occupied. Himself a former vice-chancellor of Kurukshetra University, an MLA in the Haryana Assembly, and now the first incumbent to the newly created Dr Sarup Singh Chair at the same university, the author's career bears a striking e resemblance to that of his subject. Interestingly both s are from Rohtak district, and both earned Ph.Ds in English Studies from abroad; Dr Sarup Singh from the University of London on 18th-century English drama, and Professor Dahiya from the University of Cincinnatti on Ernest Hemingway.

Papers published by him

He published a paper entitled The Mauryas: Their Identity (Vishveshvaranand Indological Journal, Vol. 17 (1979), p.112-133) in 1979 wherein he concluded that the Mauryas were the Muras or rather Mors and were Jat of Scythian or Indo- Scythian origin. It is claimed that the Jats still have Maur or Maud as one of their clan name. Consequently Ashoka, Chandragupta and all other emperors of Maurya dynasty were Scythian Jats. The Jat immigrants are close kin of the ancient Gutians of Sumer and the Goths or Gots known in Latin as Getae.

Death

He died on 13 May 2000.

नीरजा भनोट

(7 सितंबर 1963 - 5 सितंबर 1986)

–लक्ष्मण सिंह फौगाट

नीरजा भनोट मुंबई में पैन ऍम एयरलाइन्स की विमान परिचारिका थीं। 5 सितंबर 1986 को मुम्बई से न्यूयॉर्क जा रहे पैन एम लाइट 73 के अपहृत विमान में लगभग 400 यात्रियों की अन्तरिक्ष विमान में जान बचाते हुए और सहायता एवं सुरक्षा करते हुए वे आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गईं थीं। उनकी बहादुरी के लिये मरणोपरांत उन्हें भारत सरकार ने शान्ति काल के अपने सर्वोच्च वीरता पुरस्कार अशोक चक्र से सम्मानित किया और साथ ही पाकिस्तान सरकार और अमरीकी सरकार ने भी उन्हें इस वीरता के लिये सम्मानित किया है। क्योंकि इस विमान में बैठे अन्य देशों के यात्रियों की जान नीरजा भनोट के कारण ही जान बच गई लेकिन उन्होंने आंतकियों से लड़ते हुए अपना बलिदान दे

दिया और वीरगति को प्राप्त हो गई। आज उन्हें 'द हिरोइन ऑफ हाई चौंक' के नाम से जाना जाता है।

नीरजा का जन्म 7 सितंबर 1963 को पिता हरीश भनोट और माँ रमा भनोट की पुत्री के रूप में चंडीगढ़ में हुआ। उनके पिता बंबई (अब मुंबई) में पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत थे और नीरजा की प्रारंभिक शिक्षा अपने गृहनगर चंडीगढ़ के सैक्रेड हार्ट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में हुई। इसके पश्चात् उनकी शिक्षा मुम्बई के स्कोटिश स्कूल और सेंट जेवियर्स कॉलेज में हुई।

इसके बाद उन्होंने पैन एम में विमान परिचारिका की नौकरी के लिये आवेदन किया और चुने जाने के बाद मियामी में ट्रेनिंग के बाद वापस लौटीं।

5 सितम्बर, 1986 को मुम्बई से न्यूयॉर्क के लिये रवाना हुए पैन ऍम–73 को कराची में चार आतंकवादियों ने अपहृत कर लिया और सारे यात्रियों को बंधक बना लिया। नीरजा उस विमान में सीनियर एयर होस्टेज पर्सर के रूप में नियुक्त थीं और उन्हीं की तत्काल सूचना पर चालक दल के तीन सदस्य विमान के कॉकपिट से तुरंत सुरक्षित निकलने में कामयाब हो गये। पीछे रह गयी सबसे वरिष्ठ विमानकर्मी के रूप में यात्रियों की जिम्मेवारी नीरजा के ऊपर थी और जब 17 घंटों के बाद अन्त में आतंकवादियों ने यात्रियों की हत्या शुरू कर दी और विमान में विस्फोटक लगाने शुरू किये तो नीरजा भनोट ने भोजन के पैकेट बांटने शुरू कर दिये, सब से पहले आतंकियो को ही खाना दिया गया और नीरजा ने इस का फायदा उठाते हुए विमान की लाईट बन्द होने से अन्धकार हो गया और नीरजा विमान का इमरजेंसी दरवाजा खोलने में कामयाब हुईं और यात्रियों को सुरक्षित निकलने का रास्ता मुहैय्या कराया।

वे चाहतीं तो दरवाजा खोलते ही खुद पहले कूदकर निकल सकती थीं किन्तु उन्होंने ऐसा न करके पहले यात्रियों को निकालना अन्त में इसी प्रयास में तीन बच्चों को निकालते हुए जब एक आतंकवादी ने बच्चों पर गोली चलानी चाही नीरजा ने बीच में आकार मुकाबला करते वक्त उस आतंकवादी की गोलियों की बौछार से चार गोलियां लगने से नीरजा की मृत्यु हो गई। नीरजा के इस वीरतापूर्ण आत्मोत्सर्ग ने उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हीरोइन ऑफ हाईजैक के रूप में मशहूरियत दिलाई।

नीरजा को भारत सरकार ने इस अदभुत वीरता और साहस के लिए मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया जो भारत का सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार है। अपनी वीरगति के समय नीरजा भनोट की उम्र 23 साल थी। इस प्रकार वे यह पदक प्राप्त करने वाली पहली महिला और सबसे कम आयु की नागरिक भी बन गईं। पाकिस्तान सरकार की ओर से उन्हें तमगा–ए–इन्सानियत से नवाजा गया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नीरजा का नाम हीरोइन ऑफ हाईजैक के तौर पर मशहूर है। वर्ष 2004 में उनके सम्मान में भारत सरकार ने एक डाक टिकट भी जारी किया और अमेरिका ने वर्ष 2004 में उन्हें जस्टिस फॉर क्राइम अवार्ड दिया है।

नीरजा की समृति में मुम्बई के घाटकोपर इलाके में एक चौराहे का नामकरण किया गया जिसका उद्घाटन 90 के दशक में जानेमाने अभिनेता अमिताभ बच्चन ने किया। इसके अलावा उनकी स्मृति में एक संस्था नीरजा भनोट पैन ऍम न्यास की स्थापना भी हुई है जो उनकी वीरता को स्मरण करते हुए महिलाओं को अदम्य साहस और वीरता हेतु प्रोत्साहित करती है। उनके परिजनों द्वारा स्थापित यह संस्था प्रतिवर्ष दो पुरस्कार प्रदान करती है जिनमें से एक विमान कर्मचारियों को वैश्विक स्तर पर प्रदान किया जाता है और दूसरा भारत में महिलाओं को विभिन्न प्रकार के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने और संघर्ष के लिये भी प्रोत्साहित किया जाता है और पुरूस्कार दिये जाते है। प्रत्येक पुरूस्कार की धन्राषित 1,50,000 रुपये हैं और इसके साथ पुरस्कृत महिला को एक ट्रोफी और स्मृतिपत्र दिया जाता है। महिला अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिये प्रसिद्ध हुई राजस्थान की दलित महिला भंवरीबाई को भी यह पुरस्कार दिया गया था।

नीरजा के इस साहसिक कार्य और उनके बलिदान को याद रखने के लिये उन पर फिल्म निर्माण की घोषणा वर्ष 2020में ही हो गयी थी परन्तु किन्हीं कारणों से यह कार्य टलता रहा। अप्रैल 2020 में यह खबर आयी कि राम माधवानी के निर्देशन में इस फिल्म की शूटिंग शुरू हुई है। इस फिल्म में नीरजा का किरदार अभिनेत्री सोनम कपूर ने अदा किया है। यह फिल्म बाद में रिलीज हुई है। इस फिल्म के प्रोड्यूसर अतुल काशबेकर हैं। नीरजा भनोट को आज भी उनको अद्भुत वीरता/साहस के लिए हमेशा विस्मणीय शस्सियत के रूप में याद रखा जाएगा। इनकी वीरता और अपार साहस का अनुकूल प्रभाव हमारे महिला समाज पर काफी असरदार रहेगा। जिससे हमारी महिलाओं के हौंसले बुलन्द रहेंगे।

How India can be free from Fossil Fuels

- Prof. R.N.Malik

The five top CO_2 gas emitter nations of the world are China, America, India, Germany or Russia and Japan. Together, they produce 62% of the total CO_2 emissions into the environment annually accompanied by an significant amount of air pollution. Unfortunately, Climate Change Conference is least worried about the extent of air pollution problem while CO_2 gas is a non-polluting agent. In the 26th U. N. Conference on Climate Change (COP26) held at Glasgow on 31st October 2021, America, Germany and Japan committed to achieve Net Zero Carbon emissions by 2050. China agreed to do so by 2060 and India committed to cross that elusive milestone by 2070. So young generation below the age of 20 years only will be able to see that day of 1st April 2070. Net Zero Emission level by 2060 by all nations of the world will ensure that average temperature rise of the earth's atmosphere will remain below the tipping point of 1.5 degree Celsius in order to keep the erratic behavior of the climate within manageable proportions. To achieve Net Zero Emission milestone by any of the industrial nnation by 2060 is a very tall claim or a tough call.

Net Zero carbon emissions target means that all nations will limit their emissions to the extent that these are absorbable by the plant kingdom (forests and agricultural crops etc) and other carbon sinks. It is very difficult to calculate or estimate the precise value of Net Zero Emission level . But approximate value comes to 30% of the existing levels of Carbon emissions. For example, India burns 900 mt (million tonnes) of coal annually through thermal power plants and other industrial uses. Therefore, she would have to limit this consumption to 270 mt (or 75000 MW capacity of thermal power only) in 2070. So rest of the thermal power plants with a capacity of 1.75 lac MW will have to be phased out Likewise, LNG and crude oil consumption will be limited to 10 mt and 66 mt respectively. This is notwithstanding the exponential increase in demand in energy due to three unavoidable factors I. e. rise in population, urban migration and rise in living standards or continous GDP growth at the rate of 6% on an average. Therefore, this energy diffrentia will be balanced or offset by developing adequate amount of renewable energy to cope with the total demand. Presently, India generates 3.o lac MW equivalent of thermal power from diffrent resources and by a conservative estimate, the total power demand by 2070 may reach a peak value of 9.0 lac MW. One MW of thermal power is equal to 6 MW of solar power, 2.2 MW of hydropower and 4.5 MW of wind power. Now you can imagine yourself if renewable resources can meet that demand inspite of their serious limitations to be explained ahead in the article.

Development of renewable energy has a special significance for India as she has to import 21million tonnes of LNG (Liquified Natural gas) from and 190 mt of crude oil from Arab countries in exchange of hard earned foreign exchane.. So development of equivalent amount of RE will save the foreign exchange significantly and boost the strength of Indian currency.

Limitations of Renewable Energies:-

There are four principal alternative sources of energy that can decarbonise the global environment. These are nuclear , solar, wind and hydropower energies. Development of nuclear energy is totally ruled out after the explosion in the Fukushima nuclear power plant in Japan. The remaining three energy resources are not equally distributed throughout the world and that is why energy resources have become both the trade links among nation's and strategic weapons too with some countries like Russia. These sources have their limitations too in their round the clock development. For example, solar energy is available for 3600 hour in a year in Sahara desert of North Africa but only for 1000 hours in black forests of Germany. Also it is not available at night. Likewise, hydropower stations run only for six hours during dry weather flow in northern Indian rivers. Strong winds are available at the North sea near England. At other coastal areas, the wind velocity is not uniform during the day and in all seasons Also solar energy requires an area of 5 acres or two hectares to develop one MW of electricity. Also one MW of solar energy generates 4000 units per day whereas one MW of thermal power generates 24000 units per day. Also power demand in any country is not uniform throughout the day and round the year. Therefore, it becomes very difficult to synchronise the generation cycle of RE with the demand cycle of the power.

But recently a new brand of renewable energy is entering the energy mix of three RE resources and that is Hydrogen gas. It's entry will definitely bring stability to the generation cycle of RE resources and help in better synchronization with the demand cycle. We will have to be familiar with its basic characteristics to understand it's utility. These are enumerated below.

1. Weight of one cubic meter of Hydrogen gas is only 90 gms and it is 13 times lighter than air and nine times lighter than Methane or natural gas or LNG.
2. Generation of one kg of hydrogen gas requires 50 units of electricity and 9 litres of water.
3. The propulsion energy of 4 litres of liquid hydrogen (036 gm) is same as the one litre of petrol.
4. The calorific value of one kg of hydrogen gas is

36000 kcalories against 12000 kcalories of natural gas or LNG.

5. The weight of lithium battery in Mahindra XUV 400 model is one third of the total weight of 1568 kg whereas the weight of Hydrogen fuel cells is only 56 kg. Taking into account the weight of the battery, the electric efficiency of EV is 56% against the energy efficiency of a hydrogen gas car as 36%. But taking into account the life of battery and the range per filling , the hydrogen propelled car competes well with the EV.

6. Hydrogen gas can be transmiited through the existing gas pipelines to provide the equivalent amount of energy as the natural gas.

7. Like LNG , hydrogen gas can be liquified at -253 degree Celsius and can be transported with the help of trucks and ships.

8. Hydrogen gas can be used for power generation, cooking, running vehicles, trains, ships, and even aeroplanes like the LNG or the compressed natural gas.Therefore, hydrogen gas is a new form of oil and gas resource for all practical purposes.

Use of Hydrogen gas for vehicals;-

70% of crude oil (with present global consumption of 99mbpd) is consumed in running the transport. The exhaust gases of vehicles are both toxic and emitters of CO2. The entire transport system cannot be run electrically. As already stated, hydrogen cars more or less compare favourablly with electric cars. But for buses and trucks, the hydrogen fuel supercedes the EVs because the weight of battreys become cumbersome and the efficiency also goes down once the battery's are added in series . Hydrogen being very light in weight is a suitable substitutes for diesiel fuel in case of ships though I reserve my comments for aeroplanes. Hydrogen fuel will not be needed in case of metro trains and Railways as they can draw the current directly from the electric lines overhead. However, trains in America are being run with diesel oil. Both China and South Korea have set a target of running one million hydrogen cars by 2030 each. They are crying from house tops that Hydrogen gas is the fuel of tomorrow.

Generation of Hydrogen gas;-

One kg of Hydrogen gas requires 9 litres of potable water and 50 units of electricity during the electrolysis process. The gas cannot be produced from pure water with Zero TDS. Some salt has to be added to act as an electrolyte. But once hydrogen has to be produced from sea water or any other source with excess dissolved solids, then the brackish raw water has to be desalinised and consumes excess extra units of power. But arranging potable water at the rate of 9 lpkg is not a big demand or big deal and can be produced by rain water harvesting or transported from the existing canal net work. Following example will clarify the concept.

India receives 8.5 million tonnes of LNG from Qatar at Dahej terminal in Gujrat annually. In order to substitute this gas with hydrogen, we require production of 3 million tonnes of hydrogen gas per year or 8000 tonnes per day.(calorific value of hydrogen gas is 3 times the calorific value of LNG). It can be calculated that production of 8000 mt of hydrogen gas will require only 30 cubic ft per second flow of potable or canal water. But it will require a solar power plant of one lac MW capacity. The capacity will be reduced if wind power is generated simultaneously along the Gujrat coast.. To run the hydrogen gas plant continously at night, you require a continous hydropower supply of 16000 MW connected through the grid. This is the main limitations in the use of Hydrogen gas as it requires huge solar power and hydropower plants for its manufacturing in order to decarbonise India. Presently, India consumes 28 mt of natural gas annually and it requires a solar plant of 3 lac MW of solar power for its complete substitution and 50000 of hydro power energy. Minimum flow in Brahmputra river is 1.25 lac cusecs and it has a potential of generating one lac MW of hydro power at 95% load factor.

Hydrogen projects taken up by other countries:-

1. Germany is planning to set up big wind power plants on islands in the North Sea where wind velocity is very high round the year and produce Hydrogen and transport the same to Hemburg through the pipeline main. Germany is also setting up a pilot solar power plant of 4 GW capacity in Saudi Arabia to produce 650 tonnes of hydrogen per day. Germany is also planning to set up a huge hydro power plant in Congo and use that energy to produce Hydrogen. The fact of the matter is that European Union wants to get rid of Russian gas.

2. Japanese companies have set up three similar solar power plants in Australia to generate hydrogen gas.

3. South Korea is also planning to set up solar power plants in Australia.

Bottomline;-

Hydrogen is a reliable source of energy to decarbonise the world but it's only limitation is that it will require behemoth or giant solar, wind or hydropower plants. In India, to replace existing thermal power plants of 2.5 lac MW capacity, you require 15 lac MW of solar power plants. Moreover, you cannot store solar electric energy to continue supply at night. Power plant of 15 lac MW will require 3 million hectare of land i.e.30000 sqkm of area. The only way to decarbonise the top five consumer countries of hydrocarbons, is to go in for installing nuclear power plants. I am giving these figures for the existing power scenario of india. The power scenario of India in 2070 will be more frightening. Similar situation

will exist for other countries as well. This shows that to meet power demand for the year 2060, renewable sources will simply be not available and this fact alone makes the commitments untenable . There is no limit to produce Hydrogen. It is also true that Solar power too can be installed required to generate this much hydrogen But solar energy is not available at night. So how to run the system at night? This is the billion dollar question.

पिछले अंक, शेष पेज–15

चौधरी छोटा की जनता पार्टी के गठन का शताब्दी वर्ष 2023

–सूरजभान दहिया

हमारी सरकार के 90 फीसदी कार्यक्रम शोषित समाज की आर्थिक शैक्षणिक तथा सामाजिक उत्थान हेतु क्रियान्वित है। हम धार्मिक उन्माद से कोसों दूर है। हम चाहते हैं कि हमारे किसान भाई जो देहात में रहते हैं, आर्थिक स्तर परस्वतंत्र बन जाए। उन्हें उनकी कृषि उपज का लाभकारी मूल्य मिले जैसे कारखानों के समाज का मिलता है। हमारी जमीदारापार्टी सरकार कमेरे और लुटेरों के संघर्ष को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्प है। हमने इस संदर्भ में आधी सफलता पा ली है और शेष बचे द्वन्द्व में भी हम ही विजयी होंगे –हारना हमारी फितरत में नहीं। बस आपका हमारे साथ सहयोग बना रहे।"

लालपुर कांफ्रेंस के पश्चात चौधरी छोटूराम ने देश की बिगड़ती राजनीतिक स्थिति पर चिंता करते हुए 15 अगस्त 1944 को महात्मा गांधी को एक पत्र लिखा था। इस पत्र में उन्होंने गांधीजी को अवगत करा था कि :–

"यह कहना कदाचित उचित होगा कि पाकिस्तान का मुद्दा कहीं–कहीं आम मुसलमान के लिए आकर्षण बनता जा रहा है क्योंकि वह इसके दूरगामी दुष्परिणामों से अनिभज्ञ है। पाकिस्तान जिन्नाह की धार्मिक कट्टरता की परिकल्पना है। पंजाब की ग्रामीण जनता तो इसे कोई मसला नहीं मानती। यहां का किसान तो जिन्नाह को कोई अहमियत ही नहीं देता। चंदशहरी मुस्लिम लोग यहां से ज्वलंत विषय बनाने की फिराक में है जिससे हिंदुओं और सिखों में कुछ असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो रही है।

राजाजी का फार्मूला एक वास्तविकता से दूर की कल्पना है। इस प्रकार की कल्पलनायें पाकिस्तान के गठन करने में सहायक सिद्ध जरूर हो सकती है। अतएव हमें इस प्रकार की कल्पनाओं से बचना चाहिए। स्वभाव से जिन्नाह विधवसंक हैं, निर्माता नहीं।उनकेअलगाव पवृति है न कि समग्र भाईचारे की समर्पणता। हम आपको आश्वासन करते हैं कि जिन्नाह की योजना से अधिकतर पंजाब के मुसलमान सहमति नहीं रखते। अतएवकांग्रेस को चाहिए कि वह जिन्नाह को इतना महत्व ना दें तथा आप अखंड भारत के अपने रुख में लचीलापन आने दे। हम पंजाब में इस संबंध में चट्टान की भांति आपके साथ खड़े रहेंगे। कांग्रेसको यह भी प्रस्ताव लाना चाहिए कि पाकिस्तान के विवाद पर पंजाब तथा बंगाल के लोगों तथा वहां की सरकारो को भी सहमति ली जानी चाहिए।

पाकिस्तान एक अव्यवहारिक कल्पना है, जो कहीं मानवतावादी न होकर मानव उत्पीड़न की एक भयंकर ट्रेजडी का रूप न सिद्ध हो। आशा है कि आप इस संबंध में गंभीर विचार करेंगे तथा हमें सकारात्मक सुनने को मिलेगा।"

भारत स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो रहा था, परंतु इसके साथ–साथ देश विभाजन की त्रासदी को बचाने में भी ऐसा असहाय प्रतीत हो रहा था।कांग्रेसजिन्नाह को पाकिस्तान का तोहफा देने के लिए मन बना चुकी थी। चौधरी छोटूराम की यूनियनिस्ट पार्टी पंजाब में जिन्नाह के इस नापाक इरादे को पूरा करने के लिए चट्टान की भांति खड़ी तो थी, परंतु लंदन की ब्रिटिश हुकूमत और कांग्रेस भारत के विभाजन के पक्ष वातावरण उत्पन्न करती जा रही थी जो जमीदारा पार्टी इसे साकार होने में पंजाब की राजनैतिक शक्ति के साथ विरोध कर रही थी। पंजाब की जमीदारा पार्टी की सरकार ने जनता का विभाजन के विरुद्ध सहयोग पाने के लिए अनेक स्थानों पर रैलीयों केआयोजन का कार्यक्रम बनाया। 24 नवंबर, 1944 कोएक महाजन सभा भंग से इस पार्टी ने आयोजित की। इस सभा में चौधरी छोटूराम कोई 2 घंटे से ज्यादा बोले, उन्होंने लोगों को चेतया –"मेरे भाइयों! हम पंजाब सरकार का पिछले कोई 9 सालों से आपकी ताकत के साथ नेतृत्व कर रहे हैं। इस दौरान हमें पंजाब में जो खुशहाली लाने के प्रयास किए हैं वह आपके सामने है। हम साथ–साथ विरोधी शक्तियों को भी धर्म का उन्माद फैलाने देने में भी सफल रहे हैं। जिन्नाह बार–बार मुंबई से पंजाब में आकर यहां के शांति को माहौल को खराब करने में प्रयासरत रहे हैं परंतु आपने उसके पाकिस्तान के इरादे को पनपने नहीं दिया है और मुझे भरोसा है कि आगे भी इस प्रकार के बंटवारे के जहर को आपनही फैलने देंगे। आज पंजाब में किसान राज है, मैं इस जनसभा में आज घोषणा करता हूं कि हम आजादी की दहलीज पर खड़े हैं और आजाद भारत में भी पी किसान राज होगा। हम सभी हिंदू, सिख, मुसलमान, ईसाई भाई फिरकापरस्ती को लगाम लगाकर भारत में किसान राज का सुखद अनुभव करेंगे।

मुझे इस किसान के स्वपन को साकार करने तथा विरोधी शक्तियों से लड़ने हेतु अपना अखबार निकालना होगा,शहरी लोग जो किसान विरोधी प्रोपेगंडा चला रहे हैं उनका मुंह बंद करना होगा। मुझे आप का संपूर्ण सहयोग (तन मन एवं धन से) चाहिए।

उन्होंने अंत में जनता से प्रश्न कर डाला –क्या आप देश का बटवारा चाहते हैं? जनता ने ऊंची आवाज में उत्तर नहीं में दिया। दूसरा प्रश्न उन्होंने उन्होंने किया कि क्या आप पंजाब की भांति भारत में भी किसान राज लाने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं? उनका उत्तर था– हां, हम आज किसान राज लाने के लिए दृढ़ सकंल्प ले रहे हैं। इसके साथ साथ लोगों ने वहां खुले दिल से जमीदारा पार्टी के लिए धन की वर्षा की। चौधरी छोटूराम ने खुशीनुमा अंदाज में अपनी तकदीर को विराम दिया।

लाहौर लौटने के पश्चात उनका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया और वह इसके पश्चात जनता के बीच में नहीं आए। सरकारी कामकाज वे घर से ही करते रहे। तबीयत में सुधार ना होने के कारण जमीदारा पार्टी की गतिविधियों पर विराम सा लग गया था।इस दौरान वे चिंतित थे कि उनके सर्वप्रिय प्रोजेक्ट भाखड़ा डैम जिन पर वे 20 साल से कार्यरत थे, पर निर्माण शुरू नहीं हुआ है। उन्होंने 8 जनवरी 1945 को भाखड़ा डैम के निर्माण को शुरू करने के आदेश दे दिए और भावुकमुद्रा में कहने लगे – "आज मैंने अपनी सबसे प्यारी चीज को पूरा करने के लिए हस्ताक्षर कर दिए हैं।" और अगले दिन 9 जनवरी को वे परलोक सिधार गए।

उनकी अकस्मात मृत्यु के कारण यूनियनिस्ट पार्टी की शक्ति पर तीव्रता से प्रहार होने लगे। जिन्नाह की मुस्लिम लींक पर जो विराम चौधरी छोटूराम ने लगा रखा था वह खत्म हो गया। 1946में यूनियनिस्ट पार्टी की पंजाब में सरकार चली गई और पंजाब विभाजन के साथ 1947 में भारत आजाद हुआ और पाकिस्तान भी बना।

यूनियनिस्ट पार्टी के सूर्य का अस्त होना आजाद भारत में चौधरी छोटूराम के 'किसान राज' के स्वपन को विराम लगा गया तथा बापू जी के 'हिंद स्वराज' का स्वपन भी स्वपन रह गया। नेहरू जी को भी सरदार पटेल के परलोक सुधारने पर अपनी आधी अधूरी समाजवादी नीति लागू करने का स्वतंत्र मौका मिल गया। किसान शक्ति जो चौधरी छोटूराम ने सक्रिय की थी, वह कुशल वह प्रभावी नेतृत्व न मिलने के कारण अनाथ सी हो गई। चौधरी चरण सिंह जी ने किसान नेतृत्व का दायित्व तो संभाला जरूर और नेहरू जी के फेबियन समाजवाद का विरोध भी किया, परंतु सफलता उन्हे नही मिली। अनेक इतिहासकारों ने यूनियनिस्ट पार्टी की समीक्षा की है। वे लिखते हैं कि बीसवीं सदी के पूर्वाध में विश्व में 3 महान क्रांतियां आई, तीनों ही क्रांतियां किसान से संबंधित थी –रूसी क्रांति, चीन क्रांति और यूनियनिस्ट पंजाब क्रांति। पहली दो क्रांतियों में अपार रक्त प्रवाह हुआ था, परंतु पंजाब की यूनियनिस्ट किसान क्रांति रक्त हीन लोकतंत्र आधारित क्रांति थी। अति पीड़ादायक आश्चर्य है कि भारत में इस क्रांति को इतिहास में वह स्थान नहीं मिला जो यह क्रांति हकदार थी। इतिहासकार यह भी कहते हैं कि यदि चौधरी छोटूराम के निधन के पश्चात यदि चौधरी चरण सिंह और राजा महेंद्र प्रताप इस पार्टी का नेतृत्व करते तो कांग्रेस पार्टी इतने लंबे समय तक भारत में राज नहीं करती। जवाहरलाल नेहरू जाटलैंड की किसान शक्ति से छोटूराम काल से ही भयभीत थे, अतः वे जाट शक्ति को क्षीण करने में आजादी के बाद एक मिशन तहत कार्यरत थे। उन्होंने जब 50 के दशक में दिल्ली सुबह को तोड़ा तो उन्होंने किसान शक्ति को 'जाट बम्ब' कह दिया। य।पि चौधरी चरण सिंह ने नेहरु जी को पत्र लिखकर इसकी आपत्ति जताई थी तथा नेहरु जी ने इसकी लीपापोती भी की थी, परंतु इस मुद्दे को लेकर चौधरी चरण सिंह कांग्रेस से अलग होकर किसान शक्ति के साथ खड़े हो जाते तो निर्भीक, सक्षम किसान शक्ति के अखिल भारतवर्षीय किसान राज के पुरोधा के रूप में उभरकर सामने आते।

चौधरी छोटूराम की विचारधारा जिसे यूनियनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र कहा जाता है विश्व संदर्भ में अध्ययन हो रहा है। लूथर स्टरेज अमेरिका के किसान मसीहा चौधरी छोटूराम की विचारधारा का वशीकरण करते हुए कुछ समय पहले ही लिखा है :–

"Our farmers feed the world.TheyAre up before downAnd work wellAfter sunset.They faceAny number of challenges they cannot control".

हम आजादी पाने के बाद किसान की उपेक्षा देखते–देखते 2023 तक आ गए हैं यानी यूनियनिस्ट पार्टी के गठन को शताब्दी वर्ष तक और मैं सीधा स्पष्ट प्रश्न कर रहा हूं –चौधरी छोटूराम ने किसान को जिस नरक से निकालकर उसे एक संपन्नता का उपहार प्रदान किया था, क्यों उस पार्टी को आप भूल बैठे हैं? जो पौधा चौधरी छोटूराम ने लगाया था उसे किसानों ने सीधा क्यों नहीं? क्यों उसे सूखने दिया,क्या यही हमारी चौधरी छोटूराम के प्रति .तज्ञता का परिचय है? चौधरी छोटूराम ने चेताया था कि अपनी कौम का नेतृत्व कॉम का ही नेता करे? क्यों आज के राजनैतिक इधर उधर ठोकर खाते रहे हैं और पिछलग्गु बनकर अपना हैसियत गिरवी रखे खड़े हैं? आज की गैर किसान राजनैतिक पार्टियां कुछ छुटपुट किसान राजनेताओं को झासें में ले लेती हैं और उन्हें भोले किसान को गुमराह करने की ड्यूटी दे दी जाती है फिर किसानों के मुद्दे गौण बना दिए जाते हैं। आजादी के बाद कितने ही किसान आंदोलन चले किसानों की पीड़ा फिर भी दूर नहीं हुई। अंतिम किसान आंदोलन 13 मास चला, सरकार झुकी पर किसान को क्या फसल का लाभकारी मूल्य अभी तक नहीं मिल पाया है। कारण, क्योंकि किसान यूनियनों के पास चौधरी छोटूराम जैसा नेतृत्व नहीं है। चौधरी छोटूराम ने गेहूं के समर्थन मूल्य पर वायसराय लेवल को

साफ–साफ कह दिया था "गेहूं के दाम मैं (किसान) निर्धारित करूंगा आप (खरीदार) नहीं।" और गेहूं का मूल्य चौधरी छोटूराम ने तय किया था और वायसराय उससे ध ऊपर दाम देना पड़ता था। किसान को आज ऐसा निर्भीक नेता चाहिए।

आज लड़ाई अस्तित्व और व्यक्तित्व की है अर्थातक्या हमारा किसान समाज वजूद में रह पाएगा। यह अस्तित्व की लड़ाई है। दूसरा क्या व्यक्तित्व अपना प्रभुत्व बना पाएगा, यह द्वन्द्व है? आजादी से पूर्व देखे तो किसानों ने प्रथम स्वतंत्रता से लेकर 1947 तक लाखों कुर्बानियां दी, देश को आजादी दिलवाई, परंतु बाद में किसान को हाशिें में ला दिया। व्यक्तित्व की लड़ाई शुरू हुई। व्यक्तित्व की लड़ाई नेघराने को हावी होने का अवसर प्रदान किया। पहले गोरे इंग्लैंड से कारपोरेट कंपनी के माध्यम से भारत पर राज करते थे आज काले भारत की कॉरपोरेट कंपनियों के माध्यम से सत्ता पर काबिज है। कुछ नहीं बदला कंपनी बहादुर ही कृषि प्रधान भारत में राज करता चला आ रहा है।

मैं 2023 के प्रारंभ में अमेरिका में था। वहां पर भारत में 13 मास चले किसान आंदोलन पर गहन अध्ययन हो रहा है। कैलिफोर्निया स्टेज की स्टैनफोर्ड विश्ववि।ालय के एक शोधकर्ता से इस संबंध में मेरी बात हुई। वह यूनियनिस्ट पार्टी की पंजाब में चली सरकार के नेतृत्व से बड़े प्रभावित थे। उन्होंने मुझे चौधरी छोटूराम की सोच जाननी चाही, तो मैंने उन्हें बतायाः–

Chhotu RamAaj note mere liye political personA he wasA momentA Chhotu RamAsA personal has died but Chhotu GM is not yet ded ful stop so longAs the over well meaning majority of Indian living in villagesAnd developed openAgriculture for its living] so longAs the over well mining majority continue to be eÛploitedAnd knowledge improve said so longAs the rural continue to be socially educationally backward so longAs presentation in running the government so longAs regional regionalAnd communal divert from the real the economic issue Chhotu Ram will appear and again, hands myAppeal to entry would be firstA to out until victory comesA history honours the braveAnd dams the death warriorsA link loan fight fromAmericaA he is living in the hearts ofAmericans so is living Chaudhary in the hearts of farmers of India"

अब मेरी यही उपेक्षा रहेगी कि क्या किसान संगठन किसान परिवार से जुड़े राजनीतिज्ञ, किसान युवा शक्ति, किसान बुद्धिजीवी एवं अन्य प्रगतिवादी नर–नारियां यूनियनिस्ट पार्टी के शताब्दीवर्ष में एक प्रगतिशील किसान राजनैतिक दल खड़ा करके भारत को महाशक्ति बनाने हेतु दृढ़ संकल्प लेंगे।

चौधरी छोटूराम की पगड़ी संभाल जटा?

गांधी क्या बला है! चौधरी छोटू राम

– हरि सिंह

बटलर ने अन्य विषयों के अलावा भारतीय राजनीति पर छाई गांधी नामक परिघटना को भी अपने इस किसान–मित्र के माध्यम से जानना चाहा। जवाब में चौधरी छोटू राम ने गांधी के राजनैतिक कद को इन शब्दों में रेखांकित कियारू महात्मा गांधी की आवाज को दबाया नहीं जा सकता, क्योंकि वह भारत की मूक जनता की आत्मा की आवाज बन चुके हैं। पर साथ ही वे गांधी के रास्ते के समानान्तर दोहराना नहीं भूले कि किसान–देहाती प्रोग्राम पर आधारित 'मेरा अपना रास्ता है'।

महात्मा गांधी और उनके कार्य को समझना सरल काम नहीं है। इस पत्र में उनके चरित्र या पूर्ण कार्य का विवरण नहीं समा सकता। समुद्र को कूजे में बंद करने का मैं साहस नहीं जुटा पा सका हूं। मैं केवल उन्हीं बिंदुओं को स्पष्ट करूंगा जो आपने अपने पत्र में उठाए हैं। कई बातों में मेरा महात्मा गांधी से घोर विरोध है। पन्तु उनका व्यक्तित्व मेरे लिए पवित्र है। इसलिए मैं पूरी विनम्रता और आदर के साथ आपके पत्र का उत्तर यहां देता हूं।

आपका दूसरा प्रश्न महात्मा गांधी का व्यापक प्रभाव क्यों? कैसे है? का रहस्य क्या है? आपने इस रहस्य का ठीक अनुमान किया है, यद्यपि आपका अनुमान अधूरा ही है। आप सोचते हैं कि चूंकि आमतौर पर भारतवासी ब्रिटिश सरकार को साधारणतः पसंद नहीं करते, इसलिए महात्मा गांधी ने अपना फार्मूला घड़ा है जिससे यह नापसंदी प्रकट हो सके। परन्तु महात्मा गांधी की लोकप्रियता और प्रभाव के मुख्य कारण हैं उनका संतपना, उनका तीव्र देशप्रेम और उनका ऊंचा उद्देश्य जो उन्होंने अपनाया है यानी अंग्रेज राज को अहिंसा और सत्याग्रह के रास्ते से खत्म करना, न कि घृणा और हिंसा के रास्तों से।

आपने लिखा है कि महात्मा गांधी के आंदोलन का आखिरी नतीजा क्या होगा, यदि यह इसी प्रकार फैलता रहा? मैं आपसे सहमत हूं कि वर्तमान हालात, परिस्थितियों और विरोधाभासों, जटिलताओं और उलझनों के रहते यह रहस्यमय आंदोलन अराजकता तक भारत को पहुंचा देगा। कहीं भी, किसी भी कारण या छोटी–बड़ी अनायास घटना या दुर्घटना से उत्तेजना भड़क सकती है जैसे चौरा–चौरी के कांड में हुआ था और खुद महात्मा गांधी को असहयोग आंदोलन बंद करना

पड़ा था। कांग्रेस के नेताओं ने और कार्यकर्ताओं ने इसे गलत समझा था, क्योंकि आम जनता अंग्रेजी राज के खिलाफ उठती जा रही थी। परन्तु महात्मा गांधी ने अपनी अहिंसा को हिंसा में बदलते भांपा। वे हिंसक क्रांति के सिद्धांत विरोधी थे। महात्मा गांधी की तरह मैं भी सियासी गुलामी के खिलाफ हूं। मुझे असहायोग का प्रचार करने और खुद अपनाने में कोई हिंसक हिचक नहीं है यदि भारत की आजादी के लिए वह ठीक जंचे। दिमागी और सिद्धांती रूप में मैं मानता हूं कि प्रत्येक गुलाम कौम का विशेष हालात में विद्रोह (क्रांति) करने का अधिकार है।

ये विशेष हालात हैं। (1) विदेशी सरकार से न्याय मिलने की आशा खत्म हो चुकी हो। (2) राजसत्ता से टक्कर लेने में सफलता नजर आती हो। (3) आजाद होने के बाद हम अंदरूनी अमन और बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा करने की स्थिति में हों। इन तीन हालात को ध्यान में रखकर विदेशी सरकार के खिलाफ विद्रोह करना जनता का मूल अधिकार है। मैंने महात्मा गांधी का गास्पल स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि ये तीनों शर्तें मौजूद नहीं थीं। आप कहते हो कि प्रत्येक भारतवासी असहयोगी है। मैं भी असहयोगी हो जाता, यदि मुझे विश्वास हो जाता कि महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से आजादी मिल सकती थी, परन्तु मैंने महसूस किया और खूब समझा कि केवल संवैधानिक तरीके से हम आजादी की ओर ठीक–ठाक बढ़ सकते हैं, अन्यथा अंग्रेजी राज से असहयोग के नाम पर पंगा लेना अराजकता को न्यौता देना है। घृणा की बाढ़ अंग्रेजी राज को नहीं बहा सकती। अंग्रेज यूं ही अपना राज छोड़कर न लौट जावेंगे। वे व्यापारी हैं, सयाने हैं, अनुभवी हैं, पक्के साम्राज्यवादी हैं। मैं असहयोग आंदोलन की बाढ़ में आंख बंद करके नहीं कूदा। मैंने इसे अराजकता का रास्ता समझा, इसलिए मैंने इसका विरोध किया और कांग्रेस से त्याग पत्र देकर राष्ट्रीय यूनियनिस्ट पार्टी का मियां सर फजले हुसैन से मिलकर गठन किया ताकि हम संवैधानिक तरीके से फिरकापरस्ती, सूदखोरी और गुलामी के खिलाफ सबसे पहले किसानों को लामबंद कर सकें–धंधे के आधार पर हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई एकता गठित कर सकें और फिर किसान के साथ भूमिहीन वर्ग तथा आम जनता को जोड़ सकें। मुझे अंग्रेजों का टोडी घोषित किया गया, लालची बताया, जातिवादी (जाटवादी) कहकर बांस से बांधा गया, परन्तु मैंने अपना किसान रास्ता सोच–समझ कर चुना था। कानी डंडी, भ्रष्टाचार और फिरकापरस्ती के खिलाफ इन्कलाब का नारा दिया था। यह संवैधानिक क्रांति होगी जो सफल होगी। एक न एक दिन हालात पकने पर अंग्रेज को भारत छोड़ना पड़ेगा। भारतवासी अंदरूनी और बाहरी खतरों से रक्षा कर सकेगा। हमारी सेना अराजकता नहीं आने देगी। आजादी के बाद भारत गरीबी की लानत से निकलेगा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस अपने ढंग से आजादी के लिए लड़े, मैं अपने संवैधानिक ढंग से लड़ रहा हूं। पहले मैं पंजाब में और फिर भारत में किसान वर्ग युद्ध करूंगा। फिरकापरस्ती को किसान ही रोक सकता है। महात्मा गांधी सब भारतवासियों को लेकर चलते हैं। सारी दुनिया में अपना अहिंसा और सत्याग्रह का प्रचार करते हैं, परन्तु हालात की मांग है कि भारत में अंग्रेजों के खिलाफ धीरे–धीरे जनमत बनाओ। जो भारत में किसानों से शुरू हो, फिर मजदूर जुड़ें, फिर गरीब जनता। अन्यथा सत्ताधारी, धनतंत्रवादी, जागीरदार, फिरकापरस्त और अन्य भड़काऊ गैर जिम्मेदार तत्व महात्मा गांधी की दाल न गलने देंगे। काश कि महात्मा गांधी किसान को ही लेकर चलें। बाकी अपने–आप जुड़ते चले आवेंगे। अन्यथा खतरे ही खतरे हैं। जनता महात्मा गांधी नहीं बन सकती। अंग्रेज यूं ही नहीं जा सकते। फिरकापरस्त युं ही चुप नहीं बैठ सकते। स्थापित स्वार्थों की जड़ें गहरी हैं। मुंह में राम–राम, बगल में छुरी है। मुझे अपने पर, अपने संवैधानिक रास्ते पर, अपने किसान–देहाती–प्रोग्राम पर पूरा विश्वास है। महात्मा गांधी का अपना रास्ता है, 'राज' का अपना स्टैण्ड है। मेरा अपना रास्ता है। क्या इसको आप अजूबा मानेंगे?

शक्तिशाली सरकार सशस्त्र विद्रोह से आसानी से सुलट सकती है। परन्तु असहयोग आंदोलन से सुलटना बहुत कठिन है। यहां गोलियां नहीं बरसाई जा सकतीं। जनरल डायर जलियांवाला बाग में निहत्थी जनता पर अंधाधुंध गोलियां बरसा सकता था, परन्तु निहत्थी करोड़ों जनता पर सेना गोलियां नहीं बरसा सकती। 'साइमन कमीशन वापस जाओ' जुलूस के नेता लाला लाजपतराय की छाती पर एस. पी. सांडर्स बंदूक का बट मार सकता था, परन्तु करोड़ों छातियों पर नहीं। कचहरियों में जनता के खिलाफ केस नहीं चल सकता। दुनिया की सहानुभूति सच्चे असहयोगियों के साथ होगी। इसलिए महात्मा गांधी ने यह असहयोग का विशेष हथियार चुना, उनकी एकमात्र भूल मानव स्वभाव को न समझने की रही। विचार शब्द और व्यवहार में अहिंसा का विचार महात्मा गांधी का धर्म है, परन्तु इसे प्राप्त करना अति कठिन है। निस्संदेह यह ऊंचा सिद्धांत है। परन्तु आम जनता फरिश्ता नहीं है। उनको अहिंसा के मार्ग पर अंग्रेजी राज के खिलाफ ले जाना मुझे तो असंभव लगता है।

आपके अनुसार कुछ अंग्रेज महात्मा गांधी को धोखेबाज, कच्चा और चतुर समझते हैं। मुझे यह पढ़कर दुख हुआ। महात्मा गांधी यदि सच्चे ईमानदार नहीं हैं, तो वे फिर कुछ भी नहीं हैं। यहां भारत में ही अंग्रेज उन्हें पूर्ण, सच्चा ईमानदार व्यक्ति मानते हैं। उन पर संदेह करने वाले वही

अंग्रेज हैं, जो महात्मा गांधी के बेदाग चरित्र को नहीं जानते और मानते हैं कि इस भौतिक संसार में महात्मा कोई नहीं बन सकता। उनका यह संदेह निराधार है। भले ही महात्मा गांधी अकेले ही रहें, परन्तु हैं वे पूरे अहिंसक और सच्चे। उनके चरित्र में कच्चापन बिल्कुल नहीं है।।

अली भाइयो–शौकम अली और मोहम्मद अली के साथ महात्मा गांधी का तालमेल आप ठीक नहीं मानते। इस्लाम के सिद्धांत गांधीवाद से मेल नहीं खाते। आपके अनुसार इस्लाम तो विशेष हालात में हिंसा की इजाजत नहीं देता, परन्तु उसे लागू करने की हिमायत भी करता है। अली भाई कट्टर मुसलमान हैं और पक्के पैन–इस्लामिक हैं। पूरी दुनिया में इस्लाम छा जाए, परंतु आप भूलते हैं कि यह तालमेल इस समझ पर आधारित है कि अली भाई महात्मा गांधी की अहिंसा को वक्ती तौर पर स्वीकार करते हैं और मानते हैं कि समस्त संसार में इस्लाम पूर्ण आध्यात्मिक (रूहानी) बंधन है। ज्यों ही अली भाई महात्मा गांधी के नेतृत्व को ठुकराते हैं, यह तालमेल अपने आप ही खत्म हो जाएगा।

आप सोचते प्रतीत होते हों कि महात्मा गांधी नाम का भूखा है। यह आपका झूठा भ्रम है। उन्होंने चौरा–चौरी दुर्घटना की निंदा की और असहयोग आंदोलन की जंजीर एकदम खींच ली। बारदौली में सक्रिय उग्र असहयोग को स्थगित किया। 1919 में अमृतसर में सुधार माने, और जैतू के लिए जत्थे भेजने बंद करने को कहा। महात्मा गांधी तो सत्य, न्याय और अहिंसा के साथ किसी कीमत पर नाम के लालच में, कोई समझौता नहीं कर सकते। वे सच्चे महात्मा हैं। कोई राजनीतिज्ञ नहीं हैं, न कोई पाखंड है, न कोई दम्भ, न कोई आकांक्षा, न कोई चाल।

आपने महात्मा गांधी की सेना की वफादारी के बारे में टिप्पणी की कि इसमे महात्मा गांधी की अहिंसा कहां गई? जहां तक मुझे याद है महात्मा गांधी ने केवल यही कहा कि यदि निहत्थी जनता पर गोली चलाने का हुक्म हो तो इन्कार कर दें, त्याग पत्र दे दें और एशिया को गुलाम बनाने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य की मदद न करें। यह पैसिव (निष्क्रिय) असहयोग है, यद्यपि यह भी सक्रिय विद्रोह जैसा ही भयानक है, यह फौजी अनुशासन के खिलाफ जाता है, भले ही यह पैसिव असहयोग है। महात्मा गांधी ने सैनिक हिंसा को ठीक नहीं समझा।

जनरल डायर ने गोरे सैनिकों से गोलियां दगवाई थीं। भारतीय सैनिक इन्कार कर सकते थे। जैसे गोरखा सिपाहियों ने निहत्थे खुदाई खिदमतगारों–सरहदी गांधी के स्वयंसेवकों पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया था। उस समय महात्मा गांधी को गिरतार किया जाना ठीक जंचता था। मगर जब उन्होंने चौरा–चौरी हिंसक कांड के बाद खुद असहयोग आंदोलन बंद कर दिया था, अमन फैल गया था, तब उनको गिरतार करना ब्रिटिश नौकरशाही की नाक बचाने जैसा क्रूर व्यवहार था। महात्मा गांधी की आवाज को दबाया नहीं जा सकता, क्योंकि वह भारत की मूक जनता की आत्मा की आवाज बन चुके हैं। वे हिंसक विद्रोही नहीं हैं, अहिंसक नेता हैं। अंग्रेजी सरकार का नैतिक पतन है। उनको गिरतार करना कायरता है।

महात्मा गांधी शासन व प्रशासन की मशीनरी की निंदा करते हैं। वे कला और विज्ञान की कीमत पर रिस्क लेते हैं। गुजरात के संत की इस शासन भर्त्सना को जनता ठीक नहीं मानती है। अराजकता को बुलावा देना महात्मा गांधी को शोभा नहीं देता। चर्खे को स्वराज का चक्र बताना किसी की समझ में नहीं आता। चर्खा एक संवेदनशील नारा है। स्वदेशी आर्थिक हथियार है, मगर इसे आजादी लाने का शस्त्र बताना उचित नहीं जंचता। प्रत्येक भारतवासी चरखा चलाए, ताकि मांचेस्ट्रर लिवरपूल हिल जाएं और करोड़ों बेरोजगार भाइयों को रोजगार मिले। मेरी समझ में यह चर्खा जादू नहीं आता है। गांव में महिलाएं सदियों से चर्खा चलाती आईं–सुरैतिया धूपिया (रात भर–दिन भर), परन्तु कते सूत से अपनी लंगोटी, चद्दर, अंगोछा, बनवाते हैं–यह स्पष्ट उदाहरण है। जब करोड़ों चर्खे चलेंगे तो आर्थिक सहायता मिलेगी, परन्तु इस मशीन के जमाने में चर्खा मुकाबला नहीं कर सकता। गरीब जनता के लिए लाभदायक धंधा नहीं बन सकता। सच पूछो तो यह आर्थिक मजाक है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 10.07. 2000) 23/5'4" BAMS, Doing Internship BAMS. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Girl (DOB 04.02.98) 25/5'4" B. Com. from M.D.U. M.Com. from C.B.L.U. University. NET cleared. Father Head constable. Mother Housewife. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9413431141
- SM4 Jat Girl (DOB 17. 02.92) 31/5'3" M.A. Economics. B.Ed. Working as teacher in private school. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258
- SM4 Jat Girl (DOB 17.09.94) 29/5'3" M.B.A. (Post Graduate 2018), B.Com. (Graduation 2016) from IFCA Business School Punjab University. PGPM, P.G. (Certificate Programme in Managing Brand & Marketing Communication). Working as Consultant in Deloitte Office of India Gurugram. Package Rs. 11.8 lakh PA. Father ETO in Haryana Government. Mother housewife. Preference match working in private Sector. Avoid Gotras: Kodan, Nandal, Hooda (Kharb). Cont.: 9468274677
- SM4 Jat Girl (DOB 19.11.91) 31/5'3" B.Tech (ECE), PG Diploma in Housing Finance. Working as Assistant in Central Government PSU LIC on regular basis near Chandigarh. Salary Rs. 7 lakh PA. Father retired Senior Bank Manager. Preference city based

educated family residing in Chandigarh, Panchkula, Zirakpur or Hisar. . Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala, Sheoran. Cont.: 8557033198

- SM4 Jat Girl (DOB Nov 94) 28/5'2" NET in Commerce, B.Ed., HTET, PGT Commerce, Pursuing PhD. From M.D. U. Worker as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Presently working at M.K.J.K. College Rohtak. Father in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Ahlawat. Cont.: 9416193949, 9992221480
- SM4 Jat Girl (DOB 15.08.93) 29/5'5" MBBS. from Shah Medical College Rewa, (Madhya Pradesh), DNB Gynecology in Jasola Apollo Hospital New Delhi with stipend Rs. 66000/- PM. Attending ongoing counseling of NEET PG. Father ex-serviceman . Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Deswal, Mann. Cont.: 9467220190, 9991257014
- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.90) 33/5'3" Working as Class-I officer in Haryana Government. Package Rs. 25 lakh PA. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691, 8398836161
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.97) 25/5'1" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed in MNC Banglore with Rs. 12 lakh package PA. Father retired Class-1 officer from Haryana Government. Mother teacher in Haryana government. Avoid Gotras: Malik, Phaugat, Dhankhar. Cont.: 9463962490
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Pursuing Ph.D from P. U. Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.98) 25/5'8" MBBS. Working as J.R. in Safdar Jung Hospital Delhi. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Boy (DOB 20. 10. 92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 17.10. 89) 33/ 6 feet B.Tech (CSE). Employed as Inspector, GST & Central Excise Department in Ministry of Finance, Government of India at Surat (Gujrat). Girls height minimum 5'6" and between 25 to 27 years. Area of preference Panchkula, Chandigarh, Yamuna Nagar, Kurukshetra, Karnal, Hisar. Father retired Superintendent. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Jattan, Punia. Cont.: 9996858234
- SM4 Jat Boy 27/6'1" MBA, Marketing & Finance. Working as Assistant Manager in HDFC Bank Chandigarh. Father in government job at Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras: Saroha, Malik, Sehrawat. Cont.: 9463384601
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 30/6'1" B.Tech Mechanical. Working as Assistant Manager (Marketing) in Jai Parvati Forge Ltd. Company. Income Rs. 6 lakh P.A. Agriculture land 4 ½ acres. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Nehra, Kadyan, Dhull. Cont.: 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 06.04.91) 32/5'11" B.Tech. from PEC Chandigarh. IIT-JEE (Advanced). Working as Math Faculty at Allen Career Institute Chandigarh. Salary Rs. One lakh per month. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat. Cont.: 9416293888
- SM4 divorced (without issue) Jat Boy 45/6'3" Lieutenant Colonel in Indian Army. Mother Doctor Ayurvedic Own Clinic. Family settled at Nayagaon (Punjab). Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 8847034750
- SM4 Jat Boy 32/5'8" HCS, Employed as A class Tehsildar at Narnounl (Haryana). Father retired Government employee. Mother housewife. Family settled at DLF Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Narwal, Rathi. Cont.: 9812208238
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.96) 26/5'10" B.E. (Civil). Employed as J.E. in Punjab Government at Mohali. Father class-II officer in Centre Government. Mother also employed. Elder brother Caption in Army. Avoid Gotras: Dalal, Mor, Sindhu. Cont.: 7973431263, 8528488299
- SM4 Jat Boy (DOB 30.12.94) 28/5'11" B.A. Working as Clerk in Haryana Consumer Disputes Redressal Commission Panchkula. Father retired from Haryana Civil Secretariat. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwal, Chahal. Cont.: 9416603097
- SM4 only son Jat Boy 30/5'9" Convent educated. MSW from Australia. Employed as Government officer in Australia. Father and mother retired officers from Haryana Government. Own house in Australia. Family settled at Yamuna Nagar (Haryana). 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Cont.: 9518680167
- SM4 divorced Jat Boy 34/5'11" MBA, previously job. Ran café for five years. Interested in doing business. Income Rs. 85000/- PM. Father retired Deputy Commissioner Central Excise. Mother Entrepreneur. (Previously Lecturer in Haryana government). Avoid Gotras: Ahlawat, Dahiya, Sindhu. Cont.: 9967435637
- SM4 Jat Boy (DOB 01.10.93) 29/5'10" B.Tech (ECE), from GJU Hisar (Haryana), PGDCA, MBA. Working in Infosys as Team Lead Engineer with package Rs. 11 lakh PA. Family settled at Jind (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Sheoran, Sindhu. Cont.: 9812157267, 7015713669.
- SM4 Jat Boy (DOB 27.09.95) 27/5'9" MBBS from M.M.U Solan (H.P). Father Sub-Inspector in Haryana Police. Avoid Gotras:Phaugat, Gill, Dahiya. Cont.: 9812011590
- SM4 Jat Boy (DOB 15.08.98) 24/5'11" B.Tech. (CSC). Working as Developer Software Engineer at Banglore with Rs. 17 lakh package PA. Father retired from All India Radio. Mother housewife. Two sisters settled in Australia. Family settled at Kurukshetra. Seven acre agriculture land. Avoid Gotras: Narwal, Relha. Cont.: 9466588288
- SM4 divorced having nine year old son Jat Boy (DOB 27.11.88)) 34/5'9". Post Graduate Economics. Employed as Godown In-charge in Haryana State Warehousing Corporation. Salary Rs. 50000/-. Own house at Jind. Seven acre agriculture land at village. Avoid Gotras: Boora, Mor. Cont.: 9416131270
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.92) 31/6'4" B. Tech in Textile. Working in mil of textile as Technical Officer at Surat. Father retired JCO. Mother housewife. Preferred girl in Centre Government job of at least 5'4" height between 25-30 years' age. Avoid Gotras: Tomar, Kadian, Phogat. Cont.: 9416520843
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.94) 29/6'3" B. Tech. (Mechanical). Lives in Canada. Father in Government job. Mother Government teacher. Younger brother in Canada. Avoid Gotras: Shyan, Punia. Cont.: 9416877531, 9417303470

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण शुरू हो चुका है जिस पर अभी तक 18 लाख रुपये खर्च हो चुका है और इस पर लगभग 40 लाख रुपये खर्च होगा। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है और यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया के निर्माण हेतु पी०डब्ल्यू०डी० (बी एण्ड आर) विभाग कटरा द्वारा 29 लाख की ग्रांट स्वीकृत हो चुकी है और इस वर्ष ग्रांट राशि जारी होते ही पुलिया का निर्माण हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रेंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।